रोजा पार्क्स कौन थीं?
योना ज़ेल्डिस मैकडोनो
चित्र : स्टीफन मार्चेस

रोजा पार्क्स कौन थीं?

योना ज़ेल्डिस मैकडोनो

चित्र : स्टीफन मार्चेस

रोजा पार्क्स कौन थीं?

पाइन लेवल, अलबामा, 1919

रोजा पार्क्स रोज सुबह स्कूल जाती थी. हर दोपहर, वो फिर घर चलकर वापिस आती थी. स्कूल जाने के लिए कोई स्कूल बस नहीं थी. उसे चलने में कोई आपत्ति नहीं थी. उसे इसकी आदत थी.

अक्सर वह अपने पीछे एक बड़ी, पीली स्कूल बस को देखती थी. लेकिन बस उसके लिए कभी नहीं रुकती थी. बस के अंदर सभी बच्चे गोरे होते थे. बस उन्हें एक ऐसे स्कूल में ले जाती थी जो केवल गोरे छात्रों के लिए था. रोजा अश्वेत (काली) थी. रोजा, पाइन लेवल, अलबामा में पली-बढ़ी. उस समय दक्षिण में अश्वेत और गोरे लोग, अलग-अलग जीवन जीते थे. रोजा के सभी दोस्त और परिवार काले थे. वो बहुत कम गोरे लोगों को ही जानती थी. वो कैसे जानती? गोरों के रेस्तरां या होटलों में अश्वेत लोगों को जाने की अनुमति नहीं थी. अश्वेत, गोरे लोगों के साथ सार्वजनिक पूल में तैर नहीं सकते थे या उनके नलों से पानी नहीं पी सकते थे.
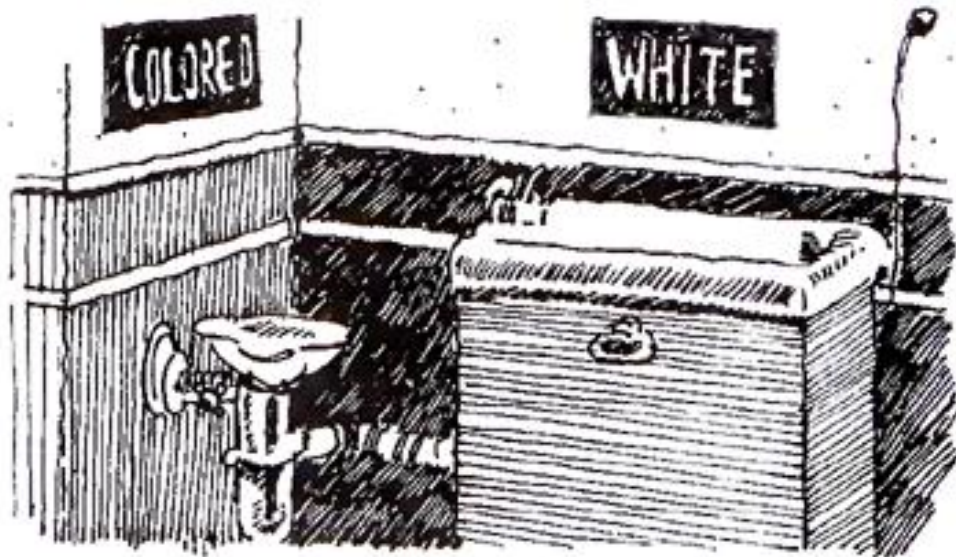
हर बार जब रोजा बस को गोरे बच्चों को स्कूल ले जाते हुए देखती, तो उसे लगता कि काले बच्चे, गोरे बच्चों की तरह मायने नहीं रखते थे. कभी-कभी गोरे बच्चे खिड़कियों से कचरा बाहर फेंकते थे, और काले बच्चों को मारने की कोशिश करते थे. थोड़ी देर बाद रोजा और अन्य अश्वेत बच्चों ने सड़क से स्कूल जाना ही बंद कर दिया. इसकी बजाए वो खेतों में से होकर स्कूल जाते थे.

गोरे बच्चों का स्कूल बहुत अच्छा था. उस स्कूल की खिड़कियों में असली कांच लगे थे. रोजा के स्कूल में कांच नहीं थे, सिर्फ शटर थे. फिर भी, रोजा अपने दिल में जानती थी कि वो किसी भी गोरे बच्चे की तरह ही होशियार थी. वो किसी भी अन्य बच्चे से अच्छी थी, और इस बात को वो एक दिन साबित करेगी.

अध्याय 1
फार्म पर काम

रोजा लुईस मैककौली का जन्म 4 फरवरी, 1913 को अलबामा के टस्केजी में हुआ था. उनके पिता, जेम्स एक बढ़ई थे. उसकी माँ, लियोना, एक टीचर थीं. रोजा अपनी उम्र के हिसाब से छोटी थी. वो अक्सर गले की खराश से बीमार रहती थी. उसे बिस्तर पर बहुत समय बिताना पड़ता था.

जब रोजा करीब ढाई साल की थी, तब उसके माता-पिता अलग हो गए. मोंटगोमरी, अलबामा के ठीक बाहर था. रोजा, पाइन लेवल में शिफ्ट हो गई. वहाँ, वो माँ और छोटे भाई, सिल्वेस्टर के साथ अपने दादा-दादी के फार्म पर रहने लगी. उसे वो फार्म पसंद था. अपने परिवार के साथ, वो खुद को सुरक्षित महसूस करती थी.

हालांकि फार्म से बाहर की दुनिया इतनी सुरक्षित जगह नहीं थी. आस-पास रहने वाले कुछ गोरे लोग "कू-क्लक्स-क्लान" नामक समूह के थे. वे अपने चेहरे को ढकने के लिए सफेद कपड़े और एक हुड पहनते थे. कई बार, क्लान के सदस्यों ने उन घरों में आग लगाई जहां काले लोग रहते थे या उस चर्च में जहां वे प्रार्थना करते थे. पुलिस ने उनके हमलों को रोकने के लिए कुछ नहीं किया.
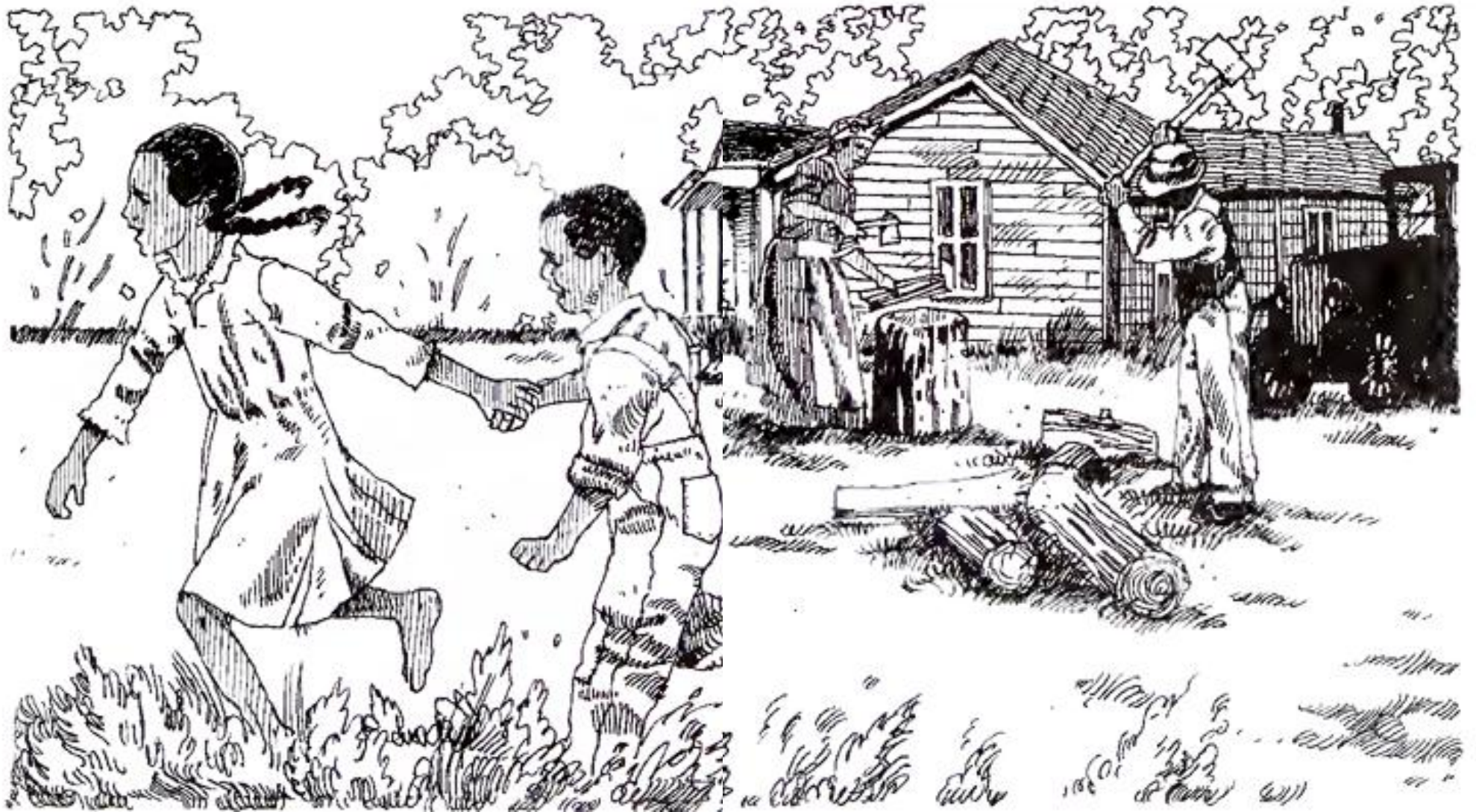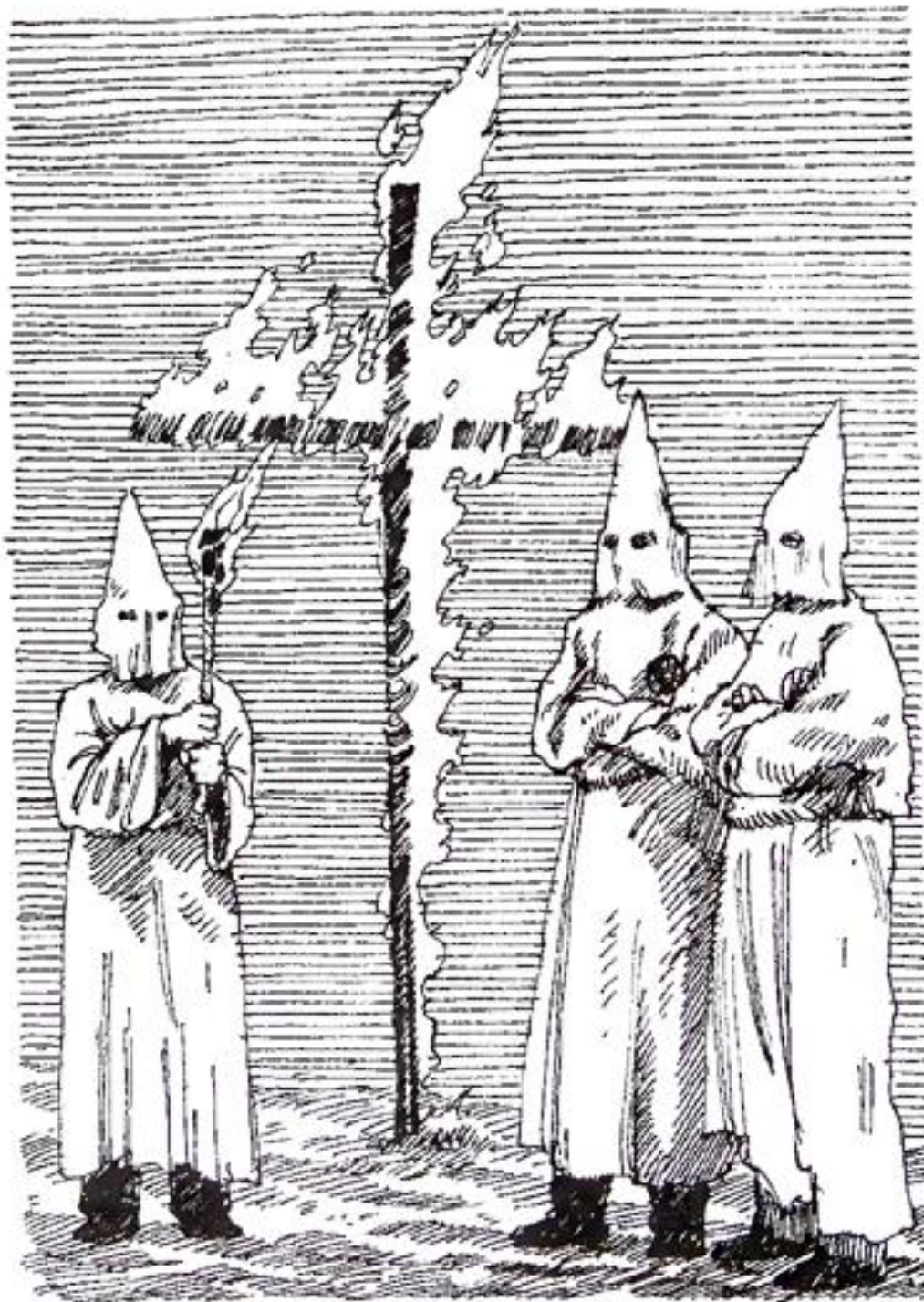
"कू-क्लक्स-क्लान"

"कू-क्लक्स-क्लान", या KKK, एक नफरत करने वाला समूह था जो काले लोगों और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ धमकी और हिंसा का उपयोग करता था. यह नाम संभवत: ग्रीक शब्द "कुकलोस" से आया होगा, जिसका अर्थ "समूह" होता है. "कू-क्लक्स-क्लान" भाइयों का एक समूह था. 1865 में गृह-युद्ध की समाप्ति के बाद संघीय सेना के टेनेसी दिग्गजों ने, इस समूह की स्थापना की थी. समूह जल्द ही पूरे दक्षिण में फैल गया. समूह के सदस्य अपने चेहरे को छिपाने के लिए सफेद कपड़े और मास्क पहनते थे. अक्सर वे पीड़ितों के घरों के सामने जलते हुए क्रास छोड़ते थे. 1920 के दशक के दौरान, जब रोजा छोटी थी, तब यह क्लान पूरे देश में फैल गया था. एक समय में, अमरीका में KKK के लगभग चार मिलियन सदस्य थे. आज यह संख्या करीब पांच हजार है.

यहां तक कि जो गोरे KKK, के सदस्य नहीं थे, वे भी क्रूर हो सकते थे. मोज़ेज़ हडसन नाम का एक धनी किसान कपास तोड़ने और काटने के लिए काले बच्चों को काम पर रखता था. वह उन्हें एक दिन में पचास सेंट वेतन देता था. बच्चे आमतौर पर जूते नहीं पहनते थे, और गर्म जमीन उनके नंगे पैरों को इतनी बुरी तरह से जला देती थी कि वे घुटनों के बल चलकर कपास तोड़ते थे. सफेद रुई पर खून लगने पर बच्चों को कोड़े मारे जाते थे.

जब क्लान के सदस्यों ने रोजा के घर के सामने से मार्च किया, तो उसके दादा दरवाज़े पर खड़े हो गए. उनके हाथ में बन्दूक थी. कुछ रात, वो अपनी गोद में बन्दूक पकड़कर रॉकिंग चेयर पर सोते थे. रोजा अक्सर उनके पास बगल में सोती थी.

जिम-क्रो कानून

दक्षिणी राज्यों में 1876 से 1965 तक, जिम क्रो कानूनों ने गोरे और अश्वेतों की सार्वजनिक सुविधाओं को अलग-अलग रखा. काले, गोरों के पड़ोस में घर नहीं खरीद सकते थे और गोरे लोगों के रेस्तरां में खा नहीं सकते थे. वे विशेष काले लॉन्ड्रोमैट में ही अपने कपड़े धो सकते थे. शब्द "जिम-क्रो" संभवतः 1800 के दशक के अंत के मिनस्ट्रेल शो से आया होगा. अफ्रीकी-अमेरिकियों का मजाक उड़ाने के लिए गोरे लोग, काले चेहरे का मेकअप पहनते थे. मिनस्ट्रेल शो स्किट में "जिम-क्रो" एक पात्र का नाम था.

फिर भी, रोजा सभी गोरे लोगों पर अविश्वास नहीं करती थी. पाइन लेवल में एक बूढ़ी गोरी महिला थी जो मछली पकड़ने के लिए जाया करती थी. वो महिला रोजा और उसके दादा-दादी के प्रति दयालु और विनम्र थी. वो उनके साथ बराबरी का व्यवहार करती थी. एक श्वेत सिपाही था जो जब भी शहर से आता था तो हमेशा उसके सिर को थपथपाता था.

पर इस तरह का एक छोटा सा इशारा भी उन दिनों बहुत असामान्य था. जैसे-जैसे वो बड़ी हुई, रोजा को उन गोरों पर दया आने लगी, जो उसे गालियां देते थे या उस पर पत्थर फेंकते थे. जो लोग उसका अपमान करते थे रोजा उन्हें माफ करना चाहती थी.

ज्यादातर समय, पाइन लेवल में रोजा खुश रहती थी. उसे अपने स्कूल से प्यार था. वो हर नए दिन के शुरू होने का बेसब्री से इंतजार करती थी.
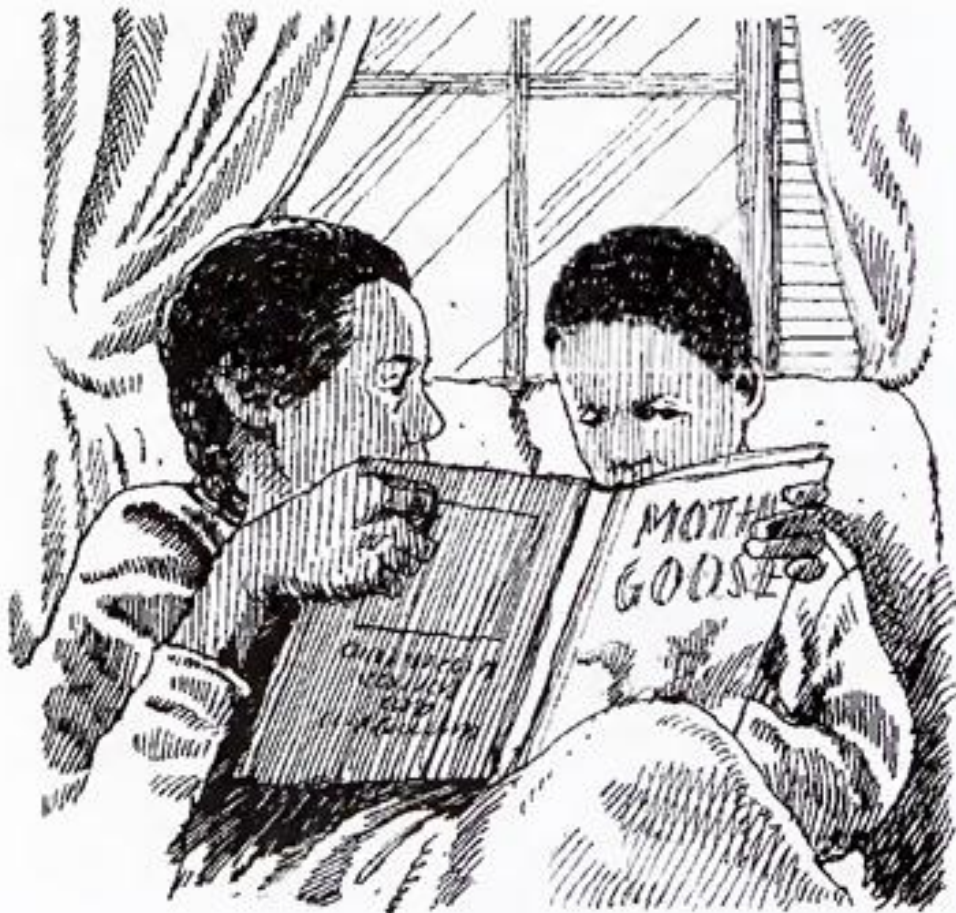
वो मदर गूज के नर्सरी गीतों का आनंद लेती, अपने दोस्तों के साथ लुका-छिपी खेलती और अपने छोटे भाई की देखभाल करती थी. उसे फार्म के पास के जंगलों, खाड़ियों और तालाबों के पास घूमना पसंद था. (लेकिन वो जहरीले सांपों से हमेशा सावधान रहती थी!) कुछ पैसे कमाने के लिए, वो पड़ोसियों को अंडे भी बेचती थी.

कभी-कभी वह स्थानीय कब्रिस्तान में घूमने चली जाती थी. वहां कुछ कब्रें गृहयुद्ध के समय की थीं. 1865 में गृहयुद्ध की समाप्ति पर दास प्रथा का अंत हुआ था. तब से, किसी व्यक्ति के लिए किसी अन्य व्यक्ति का स्वामी होना कानून के विरुद्ध था. रोजा के कुछ पुरखे गुलाम थे. अब, भले ही वे गरीब थे और अक्सर उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता था, पर अब रोजा का परिवार स्वतंत्र था.

शिक्षा बोर्ड

क्योंकि वो अमरीका के दक्षिण में रहती थी इसलिए काली होने के कारण रोजा पार्क, सफेद बच्चों के साथ स्कूल नहीं जा सकती थी. फिर, 1954 में, टोपेका, कंसास में, काले पालकों का एक समूह, स्कूल अलगाव (सेग्रीगेशन) को समाप्त करने के लिए कोर्ट गया. उनका मामला सर्वोच्च न्यायालय तक गया. वो तब तक के सबसे प्रसिद्ध केसों में से एक था.

काले माता-पिता परेशान थे क्योंकि अश्वेत स्कूल उनकी बस्ती से एक मील दूर था. छोटे बच्चों के लिए वो एक लंबी यात्रा थी. जबकि गोरों का एलीमेंट्री स्कूल बहुत पास था. काले बच्चे वहां नहीं जा सकते थे. यह गलत था.

कानून के हिसाब से सार्वजनिक स्कूल तब तक अलग रह सकते थे जब तक कि काले स्कूल, गोरे स्कूल जितने ही अच्छा होते. लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट के जजों ने कानून को बदला. अब से काले और सफेद बच्चों के लिए अलग-अलग स्कूल अवैध थे. पब्लिक स्कूलों को एकीकृत किया गया था. अब काले बच्चे अपनी मर्जी के किसी भी पब्लिक स्कूल में जा सकते थे.

अध्याय दो
शहर की रोशनी

1924 में, जब रोजा ग्यारह वर्ष की हुई, तब उसकी माँ ने उसे अलबामा राज्य की राजधानी मोंटगोमरी में अपने रिश्तेदारों के साथ रहने के लिए भेजा, ताकि वो एक बेहतर स्कूल में जा सके. लड़कियों का यह स्कूल था - मोंटगोमरी इंडस्ट्रियल स्कूल. गरीब अश्वेत लड़कियों की मदद के लिए इस स्कूल को उत्तर के गोरे लोगों ने शुरू किया था. उसमें दो सौ पचास से तीन सौ छात्र थे. स्कूल में सभी शिक्षिकाएँ उत्तर की श्वेत महिलाएँ थीं.

ऐलिस व्हाइट

स्कूल की प्रमुख एलिस व्हाइट सख्त और प्यार करने वाली महिला थीं. उन्हें अपनी छात्राओं से बहुत उम्मीद थी. रोजा उन्हें बहुत चाहती थी. मिस व्हाइट से रोजा ने खुद का सम्मान करना सीखा. क्योंकि वो काली थी इसलिए वो जीवन में अपने लिए छोटे लक्ष्य निर्धारित नहीं करेगी.

रोजा, मोंटगोमरी में रह कर काफी उत्साहित थी. उसे वो एक बड़े, आधुनिक शहर की तरह लगा. शुरुआती मॉडल टी-कारों की वहां की सड़कों पर भीड़ थी. फैंसी ड्रेस, और रेडीमेड कपड़ों की वहां अच्छी दुकानें थीं. वहां की फुटबॉल स्टेडियम में बारह हजार लोग बैठ सकते थे. लुइसविले और नैशविले के स्टेशन पर कई ट्रेनें आतीं थीं और नदी के द्वारा नावें - चीड़ की लकड़ी और कपास लाती थीं.

लेकिन कुछ मायनों में मोंटगोमरी, पाइन लेवल की तरह ही था. एक दिन, रोजा एक सफेद पड़ोस में घूम रही थी. रोलर स्केट्स पर एक सफेद लड़का तेजी से आया और उसने रोजा को धक्का दिया. लड़का उसे फुटपाथ से हटाने की कोशिश कर रहा था. रोजा मुड़ी और उसने लड़के को पीछे धकेला. पास में ही लड़के की मां खड़ी थी. उन्होंने धमकी दी कि रोजा को अपने करे के लिए हमेशा के लिए जेल में डाला जा सकता था.

"रोजा पार्क्स: माई स्टोरी" में, रोजा ने बाद में लिखा, "फिर मैंने उनसे कहा कि उनके लड़के ने मुझे धक्का दिया था जबकि मैं चुपचाप खड़ी थी. मैं उसे बिल्कुल परेशान नहीं कर रही थी." रोजा खुद अपने लिए खड़ा होना चाहती थी - और उसने वो किया.

रोजा ने मिस व्हाइट्स के स्कूल में चार साल बिताए. मोंटगोमरी में कई गोरों ने मिस व्हाइट और अन्य शिक्षकों का विरोध किया. वो आखिर काले बच्चों को को क्यों पढ़ाती थीं? वो उत्तर वापिस क्यों नहीं जातीं, जहाँ से वो आई थीं? दो बार मिस व्हाइट्स के स्कूल में आग लगाई गई. 1928 में, उसे बंद करने को मजबूर किया गया. मिस व्हाइट, मैसाचुसेट्स वापस चली गईं. हालाँकि, वह रोजा के संपर्क में रहीं, जो उन्हें एक प्यारी टीचर और प्रिय मित्र मानती थी.

उसके बाद, रोजा ने एक और ऑल-ब्लैक स्कूल में पढ़ाई की. वो अपनी मां की तरह ही एक टीचर बनने की उम्मीद कर रही थी. तभी उसकी दादी की तबीयत खराब हो गई. सोलह वर्ष की रोजा ने स्कूल छोड़ दिया और दादी की देखभाल में मदद करने के लिए पाइन लेवल वापस गई.

दादी की मृत्यु के बाद, रोजा की माँ बीमार पड़ गईं. दुबारा रोजा ने मदद की. वो स्कूल छोड़ने से खुश नहीं थी. लेकिन उसने कोई शिकायत नहीं की.

पैसे कमाने के लिए उसने गोरे लोगों के घर साफ किए. कभी-कभी उससे गुज़ारा नहीं चलता था. इसलिए वो सड़क पर खड़े होकर फल बेंचती थी.

रोजा ने कड़ी मेहनत की.

वह सेंट पॉल AME चर्च से भी संबंधित थीं. AME, अफ्रीकी मेथोडिस्ट एपिस्कोपल का संक्षिप्त नाम था. वो चर्च, मोंटगोमरी के सबसे पुराने अश्वेत पड़ोस में स्थित था. वो चर्च रोजा के जीवन का केंद्र था और वहां उसे बहुत खुशी मिलती थी. चर्च के उसके दृढ़ विश्वास ने उसे लंबे, थका देने वाले दिनों से उबरने में मदद की.

ब्लैक चर्च की भूमिका

पहले ब्लैक चर्च, 1800 से पहले फिलाडेल्फिया, पेनसिल्वेनिया में स्वतंत्र अश्वेतों ने स्थापित किए थे - पीटर्सबर्ग, वर्जीनिया; सवाना, और जॉर्जिया के चर्च. वे चर्च इसलिए शुरू हुए क्योंकि कई सफेद चर्चों में अश्वेतों को जाना मना था. अपने स्वयं के चर्चों में, अश्वेतों ने ईसाई धर्म का एक न्य ब्रांड विकसित किया जो अफ्रीकी आध्यात्मिक रीति-रिवाजों पर आधारित था.

चर्च उनके समुदायों के केंद्र बन गए. चर्चों ने स्कूलों की स्थापना की और गरीबों और जेल में बंद लोगों की मदद की. 1960 के दशक में, चर्च ने नागरिक अधिकार आंदोलन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. चर्च के पादरी नागरिक अधिकार नेता बने. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर, ऐसी ही एक पादरी थे; और जेसी जैक्सन भी.

चर्च ने रोजा को शिकायत या विद्रोह करना नहीं सिखाया. उसकी बजाए, चर्च ने उसे परमेश्वर में विश्वास करना सिखाया. भगवान उसकी देखभाल करेंगे. भगवान उसकी ज़रूरते प्रदान करेगा. लेकिन तभी उसकी मुलाकात रेमंड पार्क्स नाम के एक होनहार युवक से हुई. रेमंड के दिमाग में तमाम अलग-अलग विचार थे.

अध्याय 3
रेमंड के साथ जीवन

रोजा जब रेमंड से मिली तो वो अठारह साल की थी. वह अट्ठाईस वर्ष का था और मोंटगोमरी में एक नाई की दुकान में काम करता था. एक मित्र ने उनका परिचय कराया. रेमंड स्मार्ट था और रोजा इस बात से प्रभावित हुई. रेमंड की स्कूली शिक्षा ज्यादा नहीं थी. लेकिन उसे सीखना बहुत पसंद था.

रेमंड ने भी कठिन समय का सामना किया था. रोजा के पिता की तरह रेमंड के पिता भी बढ़ई थे. जब रेमंड छोटा था तब उसके पिता की छत से गिरकर मौत हो गई थी.

रेमंड की माँ, जिन्होंने उसे पढ़ना-लिखना सिखाया था, की भी जल्दी ही मृत्यु हो गई. तब से, रेमंड अपने ही बलबूते पर था. रेमंड, दक्षिण में अश्वेतों के जीवन के बारे में बहुत कुछ जानता था. वो नेशनल एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ कलर्ड पीपल (NAACP) के मोंटगोमरी चैप्टर के पहले सदस्यों में से एक था. लोग उसे पसंद करते थे और उसका सम्मान करते थे.

जब रेमंड और रोजा मिले, तो रेमंड स्कॉट्सबोरो, अलबामा में एक मुकदमे को लेकर परेशान था.

नौ अश्वेत किशोरों पर एक ट्रेन में, दो श्वेत महिलाओं पर हमला करने का आरोप लगाया गया था. लड़कों के खिलाफ सबूत फर्जी थे. महिलाएं झूठ बोल रही थीं. फिर भी, जूरी ने नौ लड़कों में से आठ को दोषी ठहराया. सबसे छोटे लड़के को छोड़कर सभी को मौत की सजा सुनाई गई. वो केवल बारह साल के थे. (बाद में, अधिकांश सजाएं हटा ली गईं. हालांकि, आठ लड़कों ने उस अपराध के लिए कम-से-कम छह साल जेल की सजा काटी.)

रेमंड पार्क्स इस मामले के बारे में सोचना और चर्चा करना बंद नहीं कर पाया.

असल में, स्कॉट्सबोरो लड़कों पर ध्यान आकर्षित करने के उनके प्रयासों के लिए रेमंड का क़त्ल किया जा सकता था. रेमंड के साहस से रोजा बहुत प्रभावित हुई. और उसे रेमंड पर गर्व भी हुआ.

अपनी पहली डेट पर, रेमंड अपनी चमकदार, लाल स्पोर्ट्स कार में रोजा को घुमाने ले गया. दूसरी डेट पर, उसने शादी का प्रस्ताव रखा. दो साल बाद दिसंबर 1932 में पाइन लेवल में उनकी शादी हुई. दंपति, मोंटगोमरी चले गए जो अलबामा स्टेट यूनिवर्सिटी से ज्यादा दूर नहीं था.

अश्वेत लोगों की उन्नति का राष्ट्रीय संघ NAACP

12 फरवरी, 1909 को स्थापित, NAACP अमेरिका का सबसे पुराना, सबसे बड़ा और सबसे प्रसिद्ध नागरिक अधिकार समूह है. इसके संस्थापक सदस्यों में प्रसिद्ध लेखक और इतिहासकार, डब्लू. ई. बी. डीयू बोइस थे. NAACP ने लिंचिंग को रोकने के लिए पहल की (लिंचिंग - जब लोगों का कोई समूह गुस्से में आकर बिना किसी अदालत के परीक्षण के किसी को पकड़कर मार डालता है). NAACP का लक्ष्य नस्लीय घृणा को समाप्त करना और उन अल्पसंख्यकों की मदद करना था जिन्हें उनके नागरिक अधिकारों से वंचित किया गया था. NAACP ने 2009 में अपनी एक सौवीं वर्षगांठ मनाई.

डब्लू. ई. बी. डीयू बोइस

रेमंड ने स्कॉट्सबोरो लड़कों के लिए अपना काम जारी रखा. उन्होंने अपने घर के बाहर वाले कमरे में बैठकें कीं. रोजा अपनी पहली मुलाकात को कभी नहीं भूली. उन लोगों ने बंदूकें खरीदीं. उन्हें अपनी रक्षा करने की आवश्यकता महसूस हुई. क्योंकि वे जो कुछ कर रहे थे वो एक खतरनाक काम था.

रोजा पीछे के बरामदे पर बैठ गई, उसने अपने चेहरे को अपने हाथों में छिपाया. अश्वेत लोगों को अपने जीवन को सिर्फ इसलिए बचाना था क्योंकि वे एक बैठक कर रहे थे, इस विचार ने रोजा को बहुत दुखी किया!
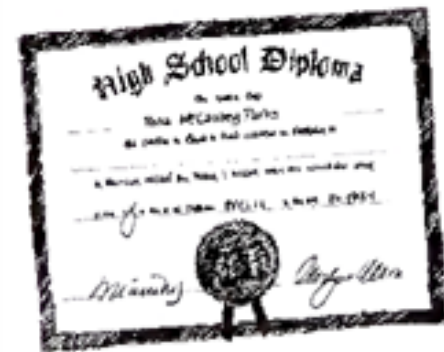
फिर भी, उसके पति के काम ने उसे प्रोत्साहित किया. रेमंड चाहता था कि रोजा वापस स्कूल जाए. और रोजा ने वही किया.

1934 में, रोजा ने अपना हाई स्कूल डिप्लोमा पूरा किया. उस समय, मोंटगोमरी में बहुत कम अश्वेत ही हाई स्कूल पास करते थे. शायद दस में से एक. रोजा को उन अश्वेतों में से एक होने का गर्व था जिनके पास डिग्री थी. फिर भी वो अभी भी ऐसा काम नहीं ढूंढ पा रही थी जो वास्तव में चुनौतीपूर्ण हो. उसकी बजाए, उसने एक नर्स के सहायक के रूप में एक अस्पताल में नौकरी की. साथ में वो घर पर सिलाई भी करती थी.

फिर, 1941 में, रोजा को, मोंटगोमरी में मैक्सवेल फील्ड नामक एक सेना वायु सेना-बेस में सेक्रेटरी की नौकरी मिली. राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने अमरीका के सभी सैन्य ठिकानों पर अलगाव (सेग्रीगेशन) पर मनाही लगाई थी.

इसलिए मैक्सवेल फील्ड को एकीकृत किया गया. वहां पर अश्वेत और गोरे एक-साथ काम करते थे. लेकिन जब रोजा अपने काम से वापिस लौटती, तो उसे एक सेग्रीगेटेड बस में घर वापिस जाना पड़ता था. उस बस में अश्वेतों को पीछे बैठना पड़ता था. यह अनुचित था और उससे रोजा बहुत गुस्सा हुई. वैसे रोजा पार्क्स शांत स्वभाव की थी. लेकिन गुस्सा उसके अंदर दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा था. जल्द ही वो इतना अधिक हो गया कि रोजा को अब उसके बारे में कुछ करना ही था.

अध्याय 4
एक्शन का समय

उधर, रेमंड NAACP से निराश होता जा रहा था. 1943 में उसने वो संगठन छोड़ दिया. उसे लगा कि NAACP के शिक्षित लीडर उसके जैसे मजदूर वर्ग के अश्वेत पुरुषों की जरूरतों को नहीं समझते थे.

लेकिन उसी साल रोजा ने NAACP में शामिल होने का फैसला किया.

रोजा, मिस व्हाइट्स स्कूल के एक पुराने दोस्त जॉनी मॅई कैर को देखने की उम्मीद में NAACP में गई. उस शाम जॉनी मॅई वहां नहीं थे. रोजा वहां रुकी रही. क्योंकि वो कमरे में अकेली महिला थी, इसलिए उससे नोट्स लेने को कहा गया.

अगले बारह वर्षों तक, रोजा ने मोंटगोमरी में NAACP के सचिव के रूप में कार्य किया. वह 1940 के दशक के दौरान नागरिक अधिकार आंदोलन में शामिल कुछ महिलाओं में से एक थीं. उसका बॉस एडगर डेनियल निक्सन नाम का एक आदमी था. निक्सन, कभी ट्रेन में कुली का काम करता था. उसने पूरे देश की यात्रा की थी. उसने देखा कि उत्तर में अश्वेत लोगों का जीवन कितना अलग था. निक्सन, दक्षिण में भी उस तरह का एकीकरण देखना चाहता था. वो उसका सपना था.

ई. डी. निक्सन

वह अश्वेत लोगों के अधिकारों में दृढ़ता से विश्वास करता था.

लेकिन क्या निक्सन को महिलाओं के अधिकारों की परवाह थी? नहीं. निक्सन का मानना था कि महिलाओं को चूल्हे-चौके (किचन) में ही रहना चाहिए. जब रोजा ने पूछा "मेरे बारे में क्या?" तो निक्सन हँस दिया.

रोजा एक उत्कृष्ट सचिव थी. उसने नोट्स टाइप किए, पत्र लिखे और बैठकें आयोजित कीं. रोजा ने लोगों को अश्वेत लोगों के खिलाफ घृणास्पद अपराधों के बारे में बताया—मारपीट और लिंचिंग के बारे में. उसने उन काले लोगों के लिए वकीलों को खोजने में मदद की जिन पर उन अपराधों का आरोप लगाया गया था, जो उन्होंने नहीं किए थे. रोजा ने अश्वेत लोगों को मतदान के लिए पंजीकरण कराने में भी मदद की. (पंजीकरण का अर्थ था अपने जिले में मतदाताओं की सूची में अपना नाम दर्ज कराना ताकि चुनाव के दिन आप मतदान कर सकें.)

मतदान लोकतंत्र में सबसे बुनियादी अधिकारों में से एक था. मतदान यह दिखाने का तरीका था कि आप सत्ता में किसे चाहते हैं और आप कौन से कानून पारित करना चाहते हैं. फिर भी मोंटगोमरी में रहने वाले पचास हजार अश्वेत लोगों में से केवल इकतीस लोगों ने ही मतदान के लिए खुद का पंजीकरण कराया. और उनमें से कुछ लोग मर भी चुके थे! इसलिए रोजा ने खुद से शुरू करके चीजों को बदलने का फैसला किया. वह वोट डालने के लिए खुद का रजिस्ट्रेशन कराने गई.

रजिस्ट्रेशन करना आसान नहीं था. पंजीकरण कार्यालय केवल कुछ घंटों के लिए ही खुलता था. और उस समय ज्यादातर लोग काम पर होते थे. उसके बाद, रोजा को एक रीडिंग टेस्ट देना था. यह टेस्ट सिर्फ अश्वेत लोगों को देना था, गोरों को नहीं.
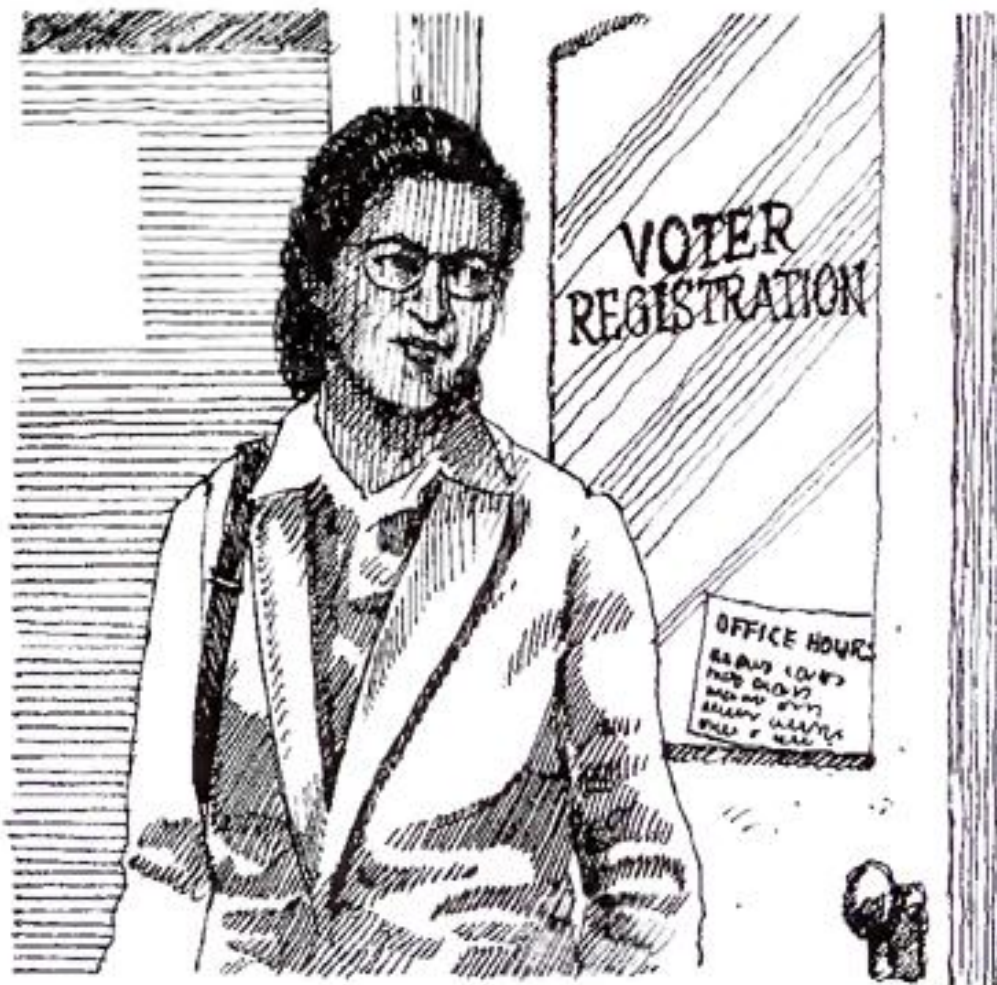
और यह टेस्ट वास्तव में पढ़ने के बारे में नहीं था. वो सरकार के नियमों के बारे में एक लंबी, कठिन परीक्षा थी. ज्यादातर लोग उन सवालों के जवाब नहीं दे पाते थे. पास होने से पहले रोजा ने तीन बार वो परीक्षा दी. जिस दिन उसका रजिस्ट्रेशन मेल में आया, वो बहुत उत्साहित हुई. लेकिन वो अभी तक वोट नहीं डाल पाई.
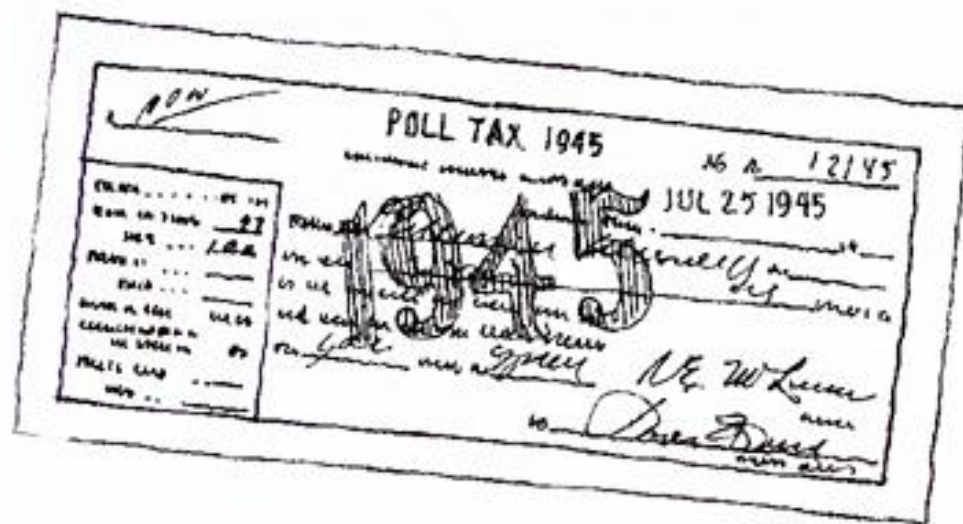
उसे एक वोट टैक्स देना पड़ा. अलबामा कानून के अनुसार, इक्कीस साल की उम्र में, मतदाताओं को वोट देने के लिए प्रति वर्ष डेढ़ डॉलर का टैक्स देना पड़ता था. रोजा अब बत्तीस की थी. इसका मतलब है कि उसके ऊपर ग्यारह साल का चुनाव टैक्स, यानी 16.50 डॉलर बकाया था.

अब यह बहुत सारा पैसा नहीं लगे. लेकिन 1945 में, एक फिल्म टिकट की कीमत मात्र दस सेंट और एक आइसक्रीम पांच सेंट में मिलती थी. तब सोलह डॉलर और पचास सेंट बहुत ज़्यादा पैसा था. फिर भी, रोजा ने उसे चुकाया. जब चुनाव का दिन आया, तो उसने अलबामा के राज्यपाल के लिए अपना वोट डाला. रोजा रोमांचित थी. लेकिन वो गुस्से में भी थी.

वोट का अधिकार प्राप्त करना लंबा, कठिन और महंगा था. बहुत से अश्वेत लोगों के लिए इन बाधाओं को पार करना असंभव था. रोजा को पता था कि मतदान एक ऐसा तरीका था जिससे अश्वेत लोग अपने जीवन को बेहतर बना सकते थे. "वोट देने से ... उसने घोषणा की, ... हमारी एक आवाज होगी."

उस आवाज को सुने जाने के लिए, उसे खुद तेज होने की जरूरत थी. यह काफी नहीं था कि रोजा वोट दे सके. दक्षिण में रहने वाले सभी अश्वेतों को वोट देने की जरूरत थी.

रोजा पार्क्स उन्हें पंजीकृत मतदाता बनने में मदद करने के लिए दृढ़ संकल्पित थी.

अध्याय 5
बस के पीछे

1945 में द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ. अमेरिकी सैनिक स्वदेश लौट आए. उनमें रोजा का भाई सिल्वेस्टर भी शामिल था. वो आर्मी मेडिकल यूनिट में था. उसने युद्ध के मैदान से घायल सैनिकों को स्ट्रेचर पर ले जाने का काम किया. सिल्वेस्टर यूरोप और दक्षिण प्रशांत में था. यूरोप में अश्वेत सैनिकों को श्वेत सैनिकों की तरह ही हीरो के रूप में देखा जाता था. लेकिन अमेरिका में वापिस आकर, अश्वेत सैनिकों को युद्ध से पहले वाले पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ा.

सिलवेस्टर मैककौल

सिल्वेस्टर अलबामा लौट आया, लेकिन उसके लिए गोरे नस्लवादियों का अपमान और धमकियां झेलना बहुत मुश्किल हो गया. वो अपने परिवार के साथ उत्तर में डेट्रॉइट, मिशिगन चला गया. उसने रोजा और रेमंड से उसके साथ वहाँ चलने की खूब खुशामद की. रोजा, डेट्रॉइट घूमने गई. वहां पर सार्वजनिक बसों में गोरों की बगल में अश्वेतों को बैठे देखना उसे आश्चर्यजनक लगा. लेकिन कई अन्य मायनों में डेट्रॉइट, मोंटगोमरी से बहुत अलग नहीं था.

1943 में, डेट्रॉइट में नस्लीय दंगों में चौंतीस लोगों की मौत हुई और सैकड़ों लोग घायल हुए - काले और गोरे दोनों. रोजा और रेमंड ने उत्तर की ओर न जाने का फैसला किया.

रोजा के लिए जिंदगी आसान नहीं थी. रेमंड की तबियत खराब थी इसलिए वह ज्यादा कमाई नहीं कर सकता था. रोजा की माँ भी अब उनके साथ ही रह रही थी. रोजा ने गोरे लोगों के घरों की सफाई की. उसने एक दर्जी की दुकान पर और बाद में एक डिपार्टमेंटल स्टोर में सिलाई का काम भी किया.

फिर भी, रोजा ने NAACR के लिए मुफ्त काम करना जारी रखा. वो NAACR के युवा समूह की सलाहकार बन गई.

हालाँकि उसका और रेमंड का अपना कोई बच्चा नहीं था, फिर भी रोजा को बच्चों से बहुत प्यार था. वो उनके साथ एक विशेष बंधन महसूस करती थी. उसने युवा अश्वेत लोगों से मोंटगोमरी के मुख्य सार्वजनिक पुस्तकालय में जाकर उसे एकीकृत करने का आग्रह किया. लेकिन जब भी अश्वेत छात्रों ने किताबें लेने की कोशिश की, तो उन्हें मना किया गया.

सार्वजनिक बसें अभी भी रोजा को बहुत परेशान करती थीं. बस सवारी के नियम जटिल थे. प्रत्येक बस में छत्तीस सीटें होती थीं. आगे की पंक्तियाँ श्वेत यात्रियों के लिए रिजर्व्ड होती थीं. पिछली पंक्तियाँ अश्वेतों के लिए होती थीं.
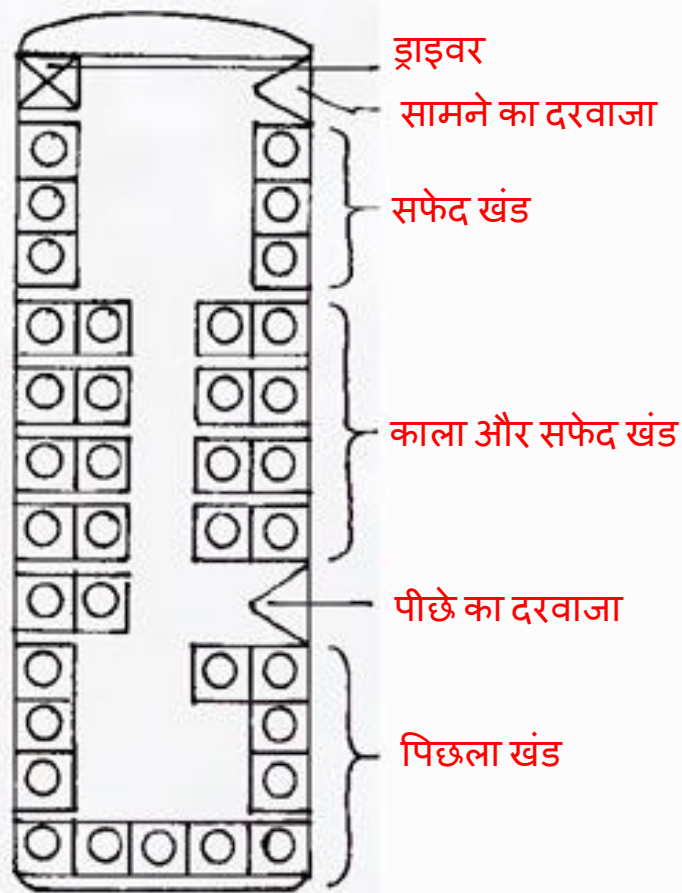
बीच की पंक्तियाँ गोरों और अश्वेतों के लिए थीं. लेकिन अश्वेत लोग, गोरे लोगों के साथ एक ही पंक्ति में नहीं बैठ सकते थे. अगर कोई गोरा व्यक्ति एक पंक्ति में बैठ जाता, तो उस पंक्ति के सभी अश्वेतों को उठना पड़ता था. अगर बस का पिछला हिस्सा भरा होता और अगला हिस्सा खाली होता, तो भी काले लोग आगे नहीं बैठ सकते थे. उन्हें पीछे खड़ा होना पड़ता था.

रोजा को उन बसों में सवारी करने से हर बार शर्मिंदगी महसूस होती थी. पर फिर भी, उसे काम पर जाने के लिए बस की सवारी करनी ही पड़ती थी. बहुत से अन्य अश्वेत लोगों को भी यही करना पड़ता था. बस की सीट एक छोटी सी बात लग सकती है. लेकिन ऐसा नहीं था. वो कुछ बड़ा दर्शाती थी. एक दोपहर, रोजा ने अपना किराया चुकाया और क्लीवलैंड एवेन्यू वाली बस में चढ़ गई. बस में काफी भीड़ थी. पीछे की तरफ काले लोग आपस में कसकर ठुँसे हुए थे. कुछ पिछली सीढ़ियों पर खड़े थे. इसलिए रोजा सामने के दरवाजे से बस में चढ़ गई. वो बस में पीछे की ओर जा रही थी जब ड्राइवर ने रोजा को बस से उतरने का आदेश दिया. वह चाहता था कि रोजा पिछले दरवाजे से दुबारा बस में चढ़े.

रोजा ने वो करने से मना कर दिया. बस में दुबारे चढ़ने के लिए वो बस से भला क्यों उतरे? ड्राइवर ने रोजा से उसका आदेश मानने को कहा. फिर भी रोजा नहीं हिली.

चालक ने बस रोक दी. उसने रोजा का कोट से पकड़ लिया और उसे अपने साथ खींचने लगा. पर सामने के दरवाजे पर पहुँचने से पहले रोजा एक खाली सीट पर बैठ गई... गोरे लोगों की सीट पर.

"मेरी बस से तुरंत उतरो!" ड्राइवर चिल्लाया.

अंत में रोजा उतर गई. लेकिन उसे जो करना था वो उसने किया.

अध्याय 6
हाइलैंडर की यात्रा

1954 में, रोजा की एक महत्वपूर्ण नई दोस्त बनी : वर्जीनिया ड्यूर. वर्जीनिया एक गोरी महिला थी जिसका जन्म और पालन-पोषण बर्मिंघम, अलबामा में हुआ था. बड़े होकर, उसे सिखाया गया था कि गोरे लोग काले लोगों से बेहतर होते हैं. लेकिन जब वो मैसाचुसेट्स में वेलेस्ली कॉलेज में गई, तब वहां पर वर्जीनिया के विचार बदलने लगे.

उसने अश्वेत छात्रों के साथ कक्षाएं लीं; उसने काले छात्रों के साथ भोजन किया. बाद में, उसने क्लिफोर्ड ड्यूर नाम के एक वकील से शादी की, जो अश्वेत लोगों के लिए समानता में विश्वास रखता था. वे अंततः मोंटगोमरी में जाकर बस गए, जहां क्लिफोर्ड ने अपना कानूनी दफ्तर खोला. क्लिफोर्ड के ज्यादातर ग्राहक काले लोग थे. वर्जीनिया ने अश्वेत महिला समूहों के साथ काम किया. वो एक प्रार्थना समूह का भी हिस्सा थी. और उस प्रार्थना समूह में वर्जीनिया और रोजा दोस्त बने.

वर्जीनिया और क्लिफर्ड ड्यूर

दोनों नए दोस्तों के पास एक-दूसरे से बातचीत करने के लिए बहुत कुछ था. वर्जीनिया और रोजा ने नस्लवाद को खत्म करने के बारे में अंतहीन चर्चाएं कीं. वर्जीनिया ने रोजा को शांत लेकिन बहादुर बताया.

उसने देखा कि लोग रोजा का बहुत सम्मान करते थे. रोजा लोगों के बीच में खुद को सहज महसूस करती थी. उसमें हास्य की अच्छी समझ थी. वैसे दोनों महिलाएं बहुत करीब थीं, लेकिन रोजा ने वर्जीनिया को उनके पहले नाम से कभी नहीं बुलाया. बीस वर्षों तक, उन्होंने एक दूसरे को मिसेज़ पार्क और मिसेज़ ड्यूर के नामों से ही संबोधित किया.

टेनेसी में हाईलैंडर नामक एक स्कूल में दस-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में वर्जीनिया ने रोजा की मदद की. इस ट्रेनिंग ने लोगों को श्रमिकों के अधिकारों और अश्वेतों के समान अधिकारों के लिए लड़ना सिखाया. इसमें उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम सभी ओर से छात्र आए थे. उनमें काले और सफेद, युवा और बूढ़े भी थे.

रेवरेंड मार्टिन लूथर किंग, जूनियर सहित कई प्रसिद्ध लोगों ने इस स्कूल में भाग लिया.

रोजा इस कार्यशाला में भाग लेने के लिए टेनेसी जाने के लिए उत्साहित थीं. जुलाई 1955 में, उसने अपनी सिलाई की नौकरी से कुछ दिनों की छुट्टी ली. वर्जीनिया ने ड्यूर्स की एक बेटी से एक सूटकेस उधार दिया और वो गई.

उस कार्यशाला ने रोजा की आंखें खोलीं. वो बयालीस साल की थीं. अपने जीवन में पहली बार, वो उन लोगों के बीच रह रही थीं जिनके लिए चमड़ी का रंग मायने नहीं रखता था. वहां गोरे लोगों ने अश्वेतों के साथ सम्मान का व्यवहार किया. वहां कामों को निष्पक्ष रूप से बांटा गया. रोजा को गोरे लोगों की सेवा करने के लिए नहीं कहा गया. उन्होंने साथ-साथ एक-समान रूप से काम किया. रोजा ने मतदान के अधिकार और अलगाव (सेग्रीगेशन) के सत्रों में भाग लिया.

शुरू में वो कुछ घबराई हुई थी. लेकिन वहां हर कोई इतना गर्म और मिलनसार था, उससे जल्द ही उसे आराम मिला. दक्षिण में अश्वेत और गरीब होना कैसा होता है? उसके बारे में रोजा ने लोगों को अपने अनुभव सुनाए. रोजा ने सामूहिक गायन में भी भाग लिया. सबसे प्रसिद्ध नागरिक अधिकार गीतों में से एक - "वी शैल ओवरकम," सबसे पहले इसी कार्यशाला में लोकप्रिय हुआ.

जब टेनेसी में कार्यशाला समाप्त हुई, तो सभी लोगों को एक नियत कार्य दिया गया. उन्हें यह पता लगाना था कि वे अपने छोटे शहरों में क्या-क्या चीजें बदल सकते थे. रोजा को समझ में नहीं आया कि मोंटगोमरी, अलबामा में कुछ कैसे बदलेगा. हालांकि, टेनेसी में रोजा ने जो समय बिताया था उसने उसे काफी बदल दिया था. रोजा एक उत्थान और मजबूत एहसास के साथ घर लौटीं. वो समानता के लिए काम करना चाहती थीं.

हम होंगे कामयाब

रेवरेंड चार्ल्स टिंडले ने 1900 के आसपास के गीत "वी शैल ओवरकम," लिखा था. ज़िल्फ़िया हॉर्टन, टेनेसी में स्कूल की संगीत निर्देशक थीं. यह वही स्कूल था जिसमें रोजा पढ़ीं थीं. ज़िल्फ़िया ने कई वर्षों बाद इस गीत को खोजा. कई सालों तक उन्होंने यह गीत अन्य लोगों को सिखाया. वो गीत सरल और शक्तिशाली था. जलूसों को मोर्चों में, अश्वेतों और गोरों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और इस गीत को एक-साथ गाया. "हम होंगे कामयाब" नागरिक अधिकार आंदोलन का अपना गीत बन गया. उसके कुछ प्रसिद्ध बोल हैं :

हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब
हम होंगे कामयाब एक दिन
ओह, मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन!

अध्याय 7
एक नया दिन

अब मोंटगोमरी की बसों में सवारी करने में रोजा को और भी अधिक परेशानी हुई. काले लोगों के साथ इस तरह से व्यवहार करना सही नहीं था. अक्सर बस सवारी की बजाए वो पैदल ही चलती थी. डिपार्टमेंट स्टोर जहाँ वो नौकरी करती थी वहां की स्थिति ज्यादा बेहतर नहीं थी.

जब लोग उससे रुखाई से बात करते तब भी उसे मुस्कुराना और विनम्रता से व्यवहार करना पड़ता था. उसने NAACP के साथ अपना काम जारी रखा. वो डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर से मिली. वो शहर के सबसे महत्वपूर्ण ब्लैक चर्च, डेक्सटर एवेन्यू बैपटिस्ट में नए पादरी थे.

मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

एडम क्लेटन पॉवेल

वह एडम क्लेटन पॉवेल, जूनियर से भी मिली, जो न्यूयॉर्क शहर के एक अश्वेत कांग्रेसी थे. रोजा को उम्मीद थी कि ये दोनों आदमी मोंटगोमरी के अश्वेतों की मदद कर सकते थे.

डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर अहिंसक विरोध में विश्वास रखते थे. उदाहरण के लिए, 1960 के मध्य में, उन्होंने दक्षिण में लंच काउंटरों पर सिट-इन्स (धरनों) का आयोजन किया. वहां की कैंटीन, काले लोगों की सेवा नहीं करती थीं. अश्वेत छात्रों के समूह लंच काउंटर पर बैठते और उनसे खाने की मांग करते थे. हालांकि उन्हें उत्तर हमेशा "न" में ही मिलता था.फिर छात्र वहां से उठने और जाने से इनकार करते थे. अक्सर उन्हें गिरफ्तार किया जाता था और पुलिस द्वारा उनके साथ कठोर व्यवहार किया जाता था. लेकिन वे कभी पीछे नहीं हटते थे. वे हमेशा विनम्र रहते थे. आखिरकार, इन सिट-इन्स ने राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करना शुरू किया.

डॉ. किंग को इस तरह की सविनय अवज्ञा के लिए तीस बार गिरफ्तार किया गया था. उनके शब्दों और कार्यों ने अश्वेत लोगों को नागरिक अधिकार आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया, अप्रैल 1968 में, मेम्फिस, टेनेसी में राजा की गोली मारकर हत्या कर दी गई.

मंगलवार, 1 दिसंबर, 1955 को रोजा पांच बजे से थोड़ा पहले ही अपने काम से निकली. वो क्लीवलैंड एवेन्यू बस पकड़ने के लिए कोर्ट स्क्वायर गई. वो आगे बढ़ी और उसने अपना किराया चुकाया. तभी उसे पता चला कि ड्राइवर कौन था. वो वही ड्राइवर था जिसने बारह साल पहले उसे बस से खींचने की कोशिश की थी.

उसका नाम जिम ब्लेक था. रोजा ने कुछ नहीं कहा और अश्वेतों के लिए आरक्षित सीटों पर जाकर बैठ गई. जल्द ही बस भर गई. गोरों के खंड में भी अधिक सीटें खाली नहीं थीं.

"रोजा पार्क्स: माई स्टोरी" में, रोजा ने उसके बाद क्या हुआ यह बताया. एक गोरे आदमी को खड़ा होना पड़ा. ब्लेक, रोजा और उस पंक्ति में बैठे अन्य अश्वेत लोगों को देखकर चिल्लाया. "तुम सब हटो. मुझे वो सीटें चाहिए." पहले तो कोई नहीं हिला और न ही किसी ने कुछ कहा. फिर ब्लेक की आवाज तेज हो गई. "जल्दी से खड़े हो और वे सीटें खाली करो!"

रोजा की कतार में से दो पुरुष और एक महिला उठे. रोजा ने उन्हें जाने दिया. लेकिन वो खुद नहीं उठी. इसके बजाए, वो खिड़की की ओर झुकी. बाद में, रोजा ने कहा कि वो बैठी रही क्योंकि: "जितनी अधिक हमने उनकी आज्ञा मानी, उन्होंने हमारे साथ उतना ही बुरा व्यवहार किया."

ड्राइवर रोजा के पास गया. "क्या आप खड़ी होने जा रही हैं?" उसने झिड़ककर पूछा.

"नहीं," रोजा की आवाज शांत लेकिन दृढ़ थी.

"ठीक है, मैं तुम्हें गिरफ्तार करवाऊंगा," उसने कहा.

"आप वो कर सकते हैं," रोजा ने उत्तर दिया. बस में हर कोई चुप था. रोजा ने अपने दादाजी और उनकी बन्दूक के बारे में सोचा. उसने इतने वर्षों के सभी अपमानों के बारे में सोचा. उसे लगा जैसे उसके पूर्वजों की ताकत, उसके साथ हो." उसने अपना मन बनाया. और वो उस पर डटी रही.

बस ड्राइवर पुलिस को बुलाने गया. कुछ मिनट बाद पुलिस की गाड़ी आई. पुलिस ने रोजा को बस से उतार दिया. उन्होंने उसे हथकड़ी नहीं लगाई. और उन्होंने उसे चोट नहीं पहुंचाई. रोजा को, वे लोग थके हुए लगे. वे एक छोटे से अपराध को निपटाना नहीं जानते थे. फिर वे रोजा को सिटी हॉल की पुलिस चौकी में ले गए.

उसे बुक किया गया और उसके फिंगरप्रिंट लिए गए. जब उसने नल से पीने का पानी माँगा, तो उसे बताया गया कि वो नल केवल गोरों के लिए था. अब रोजा को जेल जाने तक इंतजार करना था. जेल!

रोजा सिर्फ अपनी सीट पर ही बनी रहना चाहती थी. अब रोजा जेल में थी. उसे एक लंबे, अंधेरे हॉल में ले जाया गया और एक कोठरी में बंद कर दिया गया.

उसे एक फोन करने की इजाजत मिली. रोजा ने अपनी मां को फोन किया. माँ बहुत चिंतित हुईं. वो जानना चाहती थीं कि क्या रोजा को पीटा गया था. रोजा ने पिटाई से मना किया.

रेमंड पार्क्स ने एक कार उधार ली और वो रोजा को लेने आया. इस समय तक, अन्य लोगों तक रोजा की गिरफ्तारी की खबर पहुंची. रोजा की जमानत सौ डॉलर तय की गई. रोजा और रेमंड के पास इतने पैसे नहीं थे. वर्जीनिया और क्लिफोर्ड ड्यूर के पास भी उतने पैसे नहीं थे. सौभाग्य से, NAACP के एडगर निक्सन जमानत देने में सक्षम हुए. रोजा, ज़मानत पर रिहा हुईं.

रोजा ने सबसे पहले वर्जीनिया ड्यूर दिखाई दीं. वर्जीनिया खुश थीं कि कम-से-कम रोजा हथकड़ी में तो नहीं थी. फिर दोनों दोस्त गले मिले.

रोजा घर गईं. वो पूरी तरह से थक चुकी थीं. उन पर मुकदमा चलाया जा रहा था! निक्सन ने मुकदमा चलने से पहले रोजा से सोचने को कहा. वो चाहते थे कि रोजा सिटी बस कंपनी के खिलाफ केस ठोकने के बारे में सोचें. लोग, किसी कम्पनी पर तब मुकदमा करते हैं जब उन्हें लगता है कि उनके साथ कुछ अनुचित हुआ हो.

रोजा का मुकदमा न्यायाधीशों को यह सोचने के लिए बाध्य करेगा कि सार्वजनिक बसों में बैठने के नियम, कानून के खिलाफ थे. यदि न्यायाधीशों को भी ऐसा लगा, तो फिर काले या गोरे लोग, जहाँ चाहें वहां बैठ सकते थे.

पहले तो रेमंड नहीं चाहता था कि वो ऐसा करे. उसे अपनी ज़िन्दगी का डर था - उसकी हत्या भी हो सकती थी. रोजा उसके डर को समझ गई. ज़्यादा से ज़्यादा रोजा की नौकरी चली जाएगी. उसे फिर से गिरफ्तार किया जा सकता था. कोर्ट में उसका केस उसकी माँ को कैसे प्रभावित करेगा, जो बूढ़ी और बीमार थीं?

रोजा ने सोचा. फिर उसने हाँ कह दी. वो मुकदमा चलाएगी. जिम-क्रो कानूनों को समाप्त होना पड़ेगा. वो उन्हें रद्द करने में मदद करना चाहती थी. अश्वेत लोगों को भी वही स्वतंत्रता मिलनी चाहिए जो गोरे लोगों को मिली थी. निक्सन रोमांचित हुआ. मुकदमा चलाने के लिए रोजा सही इंसान थी. वो मेहनती थी. उसका कोई पुलिस रिकॉर्ड नहीं था. रोजा पार्क्स ने "माई स्टोरी" में कहा, "गोरे लोग मुझ पर उंगली उठाकर यह नहीं कह सकते थे कि मैंने कुछ गलत किया था. मेरे अश्वेत होने के कारण ही उन्होंने मुझे यह सजा दी."

नेल्सन मंडेला

1990 में, रोजा पार्क्स, नेल्सन मंडेला से मिली, जो दक्षिण अफ्रीका के महान अश्वेत नेता थे. मंडेला ने अपनी मातृभूमि में रंगभेद की बुरी प्रणाली का अंत किया.

1918 में दक्षिण अफ्रीका में जन्मे नेल्सन मंडेला एक टेम्बू प्रमुख के पुत्र थे. वह एक वकील बने और उन्होंने रंगभेद के कानूनों को चुनौती देने की कोशिश की. रंगभेद, दक्षिण अफ्रीका में अश्वेत लोगों के खिलाफ कानून की एक प्रणाली थी. इन कानूनों ने गोरे लोगों को कानूनी रूप से अश्वेतों की हत्या करने, उन्हें गुलाम बनाने, कैद करने और उन्हें सताने की अनुमति दी थी. रंगभेद का मतलब था की गोरे और अश्वेत अलग-अलग रहते और काम, और अलग-अलग यात्रा करते थे. रंगभेद एक बुरी प्रणाली थी जो दशकों तक बनी रही. अंत में मंडेला जैसे बहादुर लोगों ने उसे खत्म करने में मदद की. उन्हें जेल में डाल दिया गया. वो सत्ताईस साल तक जेल में रहे. इस दौरान उनकी ख्याति बढ़ी. यहां तक कि सलाखों के पीछे, वो दक्षिण अफ्रीका में सबसे महत्वपूर्ण ब्लैक लीडर और प्रतिरोध का प्रतीक बने. उन्हें 2 फरवरी, 1990 को रिहा किया गया. उनकी रिहाई के बाद, उन्होंने अपना काम जारी रखा, और दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति चुने गए. उन्होंने 1993 में, नोबेल शांति पुरस्कार जीता.

मोंटगोमरी में दो अश्वेत वकील थे. फ्रेड ग्रे उनमें से एक थे. वो रोजा के केस को मुफ्त में लड़ने के लिए तैयार हो गए. लेकिन रोजा को एक अच्छे वकील से कुछ ज्यादा की जरूरत थी. उसे पूरे अश्वेत समुदाय के सहयोग की जरूरत थी. सिर्फ रोजा पार्क्स ही नहीं, मोंटगोमरी के सभी अश्वेत लोग, बस कंपनियों के खिलाफ उठ खड़े हुए.

फ्रेड ग्रे

अध्याय 8
"आज कोई सवारी नहीं!"

विरोध करने के कई तरीके होते हैं. कभी-कभी लोग पैदल मार्च करते हैं और अपनी मांगों के पोस्टर हाथ में उठाते हैं. कभी-कभी वे किसी कंपनी का बहिष्कार करते हैं. इसका मतलब होता है कि अब वे उस कंपनी का माल नहीं खरीदेंगे. रोजा के वकील चाहते थे कि मोंटगोमरी के सभी अश्वेत लोग मिलकर बसों का बहिष्कार करें - वो चाहते थे कि वे एक दिन के लिए सार्वजनिक बसों में सवारी न करें.

इससे बस कंपनियों को एहसास होगा कि उन्हें अश्वेत यात्रियों की कितनी जरूरत थी. उनके बिना, बस कंपनियों को बहुत नुकसान होगा. अगर वे चाहते थे कि काले लोग वापस आएं, तो बस कंपनियों को उनके साथ बेहतर व्यवहार करना होगा.

बहिष्कार सोमवार, दिसंबर 5, 1955 के लिए निर्धारित किया गया. निक्सन और अन्य लोगों ने उस तारीख को इसलिए चुना क्योंकि वो रोजा के मुकदमे का दिन भी था.

अलबामा स्टेट कॉलेज में छात्रों और प्रोफेसरों ने बहिष्कार के प्रचार के लिए हजारों हैंडबिल लोगों में बांटें. "याद रखें हम एक सिद्धांत के लिए लड़ रहे हैं," कहने वाले पोस्टर शहर भर में चिपकाए गए.
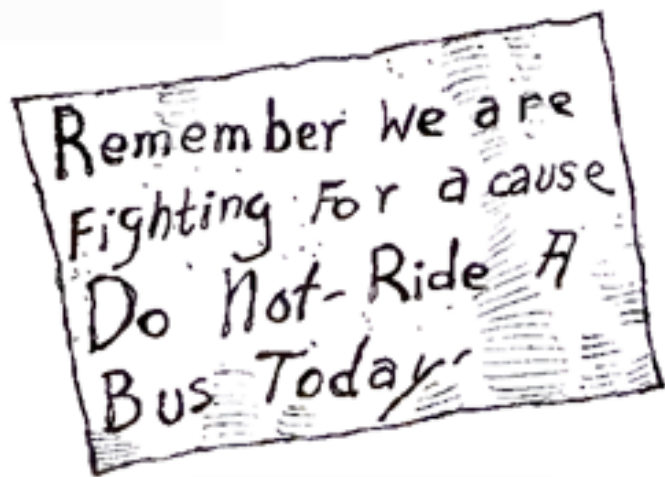
याद रखें हम एक सिद्धांत के लिए लड़ रहे हैं!

क्लॉडेट कॉल्विन

रोजा पार्क्स को गिरफ्तार किए जाने से नौ महीने पहले एक हाई-स्कूल की छात्रा क्लॉडेट कॉल्विन ने मोंटगोमेरी सिटी बस में अपनी सीट छोड़ने से इनकार कर दिया था. उसके परिवार के पास कार नहीं थी, इसलिए वो सिटी बसों से स्कूल जाती थी. 2 मार्च, 1955 को एक ड्राइवर ने उसे और तीन अन्य काले यात्रियों को चार सफेद यात्रियों के लिए अपनी सीट छोड़ने का आदेश दिया. क्लॉडेट कॉल्विन ने उठने से मना कर दिया. एक पुलिस अधिकारी ने उसे लात मारी और उसके हाथों से किताबें गिरा दीं. रोते हुए, उसे हथकड़ी पहनाई गई और जेल ले जाया गया. भले ही उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया गया था, लेकिन एडगर निक्सन को क्लाउडेट, सार्वजानिक बसों में अलगाव (सेग्रीगेशन) को चुनौती देने के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति नहीं लगी. क्लॉडेट केवल पंद्रह साल की थी और गर्भवती थी. पुलिस ने उस पर गाली-गलौज का आरोप लगाया. (क्लॉडेट ने उससे इनकार किया.) रोजा पार्क NAACP की सदस्य थी और वो एक बेहतर नागरिक और "रोल मॉडल" थी.

क्लॉडेट कॉल्विन, रोजा की तरह ही बहुत ही बहादुर थी लेकिन उसका नाम नागरिक अधिकार आंदोलन की कहानी से अक्सर छूट जाता है.

शुक्रवार को, सड़कों पर और स्कूलों, ऑफिस, नाई की दुकानों और ब्यूटी सैलून में हैंडबिल बांटे गए. उन्हें कारखानों में भी बांटा गया. शुक्रवार दोपहर तक, मोंटगोमरी में लगभग हर अश्वेत व्यक्ति के पास एक हैंडबिल था. एडगर निक्सन ने बहिष्कार में मदद की. उन्होंने शहर के काले पादरियों को भी बुलाया. रविवार को, शहर के कई अश्वेत पादरियों ने चर्च जाने वालों से बहिष्कार का समर्थन करने का आग्रह किया.

अब सवाल था कि सोमवार वाले दिन अश्वेत लोग बसों में सवार होंगे या नहीं?

सोमवार की सुबह रोजा घबराई हुई थी. उसने अपनी खिड़की में से झाँका. क्लीवलैंड एवेन्यू में से एक खाली बस बाहर निकली. शहर भर में, और साउथ जैक्सन स्ट्रीट पर, दो खाली बसें गईं.

जल्द ही सड़कें काले लोगों से भरी गईं, वे लोग स्कूल, फैक्ट्रियों या शहर में अपनी नौकरी के लिए पैदल जा रहे थे. वे अपना रोल निभाकर खुश थे. काले मोहल्लों में, बच्चों ने खाली बसों का पीछा किया. "आज कोई सवार नहीं मिलेगी!" वे चिल्लाए.

इससे पहले कभी भी मोंटगोमरी का अश्वेत समुदाय विरोध में इस तरह एकजुट नहीं हुआ था. अब पहली बार बस कंपनियों ने देखा कि उनका कारोबार अश्वेत सवारों पर कितना अधिक निर्भर था.

बहिष्कार बहुत सफल रहा.

वो बहिष्कार एक साल से अधिक समय तक चला.

मोंटगोमरी में अश्वेत लोग स्कूल और काम करने के लिए पैदल चलकर गए.
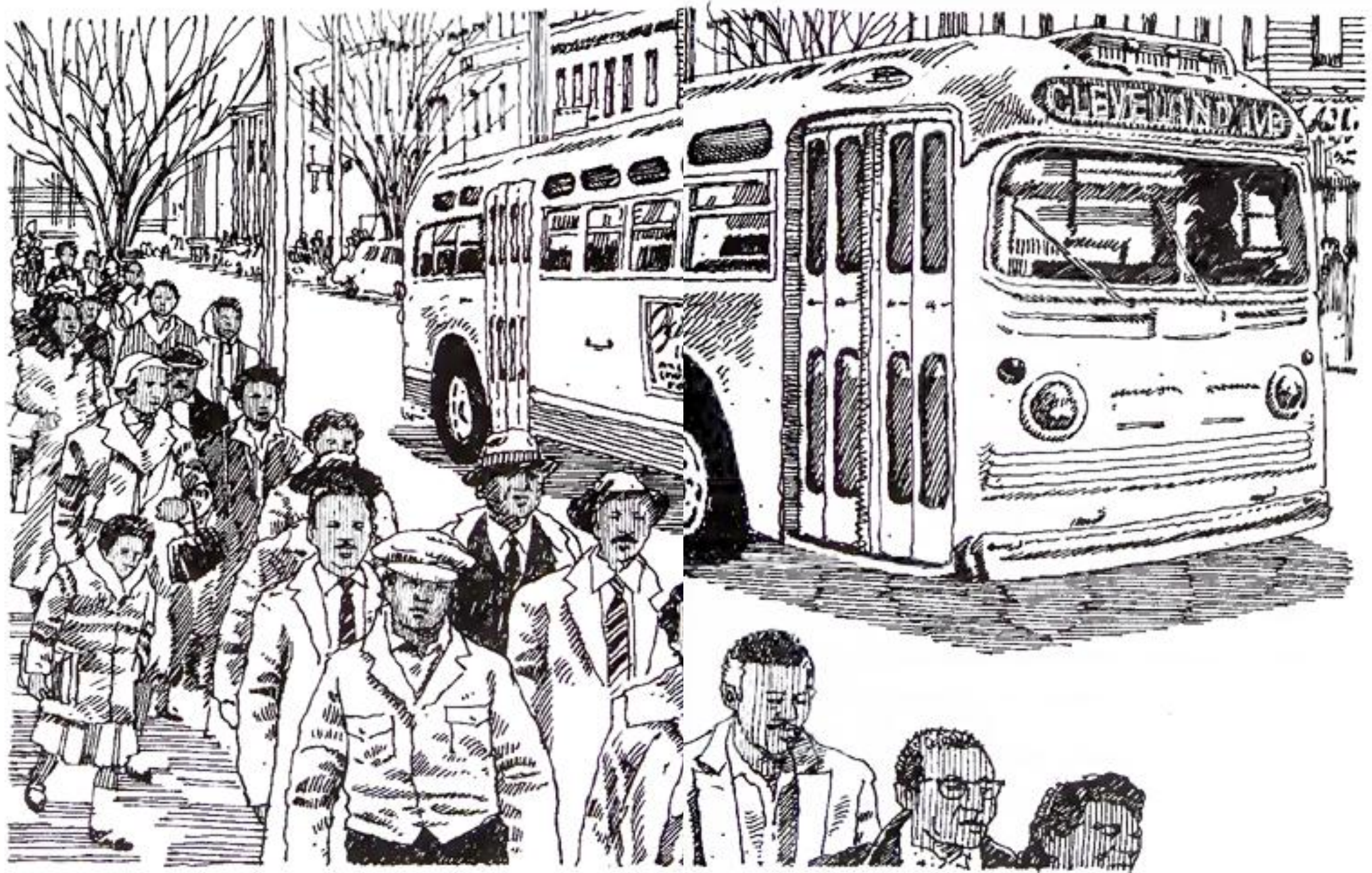
वे चर्च पैदल गए. बहिष्कार के नेताओं ने लोगों की मदद के लिए निजी कारों और वैन आयोजित कीं. टैक्सियों ने लोगों को केवल दस सेंट में सवारी दी जो बस के किराए जितनी ही थी. अपना समर्थन दिखाने के लिए पूरे देश से लोगों ने पैसे भेजे. इससे पेट्रोल और अन्य खर्चों का भुगतान करने में मदद मिली.

कई गोरे नाराज थे. उन्होंने अश्वेतों को नौकरी से निकाला. उनमें रोजा भी शामिल थी. नाई की दुकान के मालिक जहां रेमंड अंशकालिक काम करता था, ने कहा कि वो बहिष्कार की बात करने वाले हरेक व्यक्ति को निकाल देगा. रेमंड ने विरोध में इस्तीफा दे दिया. अब रोजा को घर चलाने के लिए सिलाई का काम करना पड़ा. फिर भी, अश्वेत समुदाय एकजुट और मजबूत बना रहा.

5 दिसंबर, 1955 को रोजा का ट्रायल शुरू हुआ. बस चालक जिम ब्लेक मुख्य गवाह था. उस दिन बस में सवार दो श्वेत महिलाएं भी गवाह थीं. उन्होंने झूठ बोला, यह कहते हुए कि पीछे एक खाली सीट थी जिसे रोजा ने लेने से मना किया था.

रोजा ने अपनी कहानी का पक्ष जजों के सामने पेश नहीं किया. उसका वकील वही चाहता था.

वास्तव में, वो चाहता था कि रोजा को दोषी पाया जाए. क्यों? क्योंकि तब वो मामला उच्च न्यायालय में जाता. बस नियमों को समाप्त करने का अधिकार केवल उच्च न्यायालय के पास था.

वकील की इच्छा पूरी हुई. कुछ ही मिनटों के भीतर ही रोजा को दोषी पाया गया और उस पर चौदह डॉलर का जुर्माना लगाया गया.

क्या यह अंत था? नहीं, यह तो बस शुरुआत थी. रोजा के वकील ने फैसले के खिलाफ अपील की. इसका मतलब था कि उन्हें फैसला उचित नहीं लगा था.

अब उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को रोजा का पक्ष सुनने को मिलेगा. रेमंड, रोजा के लिए डरता था और वो सही था. रोजा को फोन पर जान से मारने की धमकियाँ मिलने लगीं.

अन्य नागरिक अधिकार नेताओं को भी धमकियाँ मिलीं. रेवरेंड किंग के घर पर बमबारी की गई क्योंकि उन्होंने बहिष्कार के पक्ष में बात की थी.

अब क्योंकि वो बेरोज़गार थी इसलिए रोजा अब बहिष्कार को अधिक समय और ऊर्जा दे सकती थी. उसने चर्चों और NAACP की बैठकों में अपने अनुभवों के बारे में लोगों को बताया. उसने भाषणों द्वारा बस बहिष्कार को जारी रखने के लिए पैसे जुटाए. वो मैडिसन स्क्वायर गार्डन में भाषण देने के लिए न्यूयॉर्क शहर भी गई. न्यूयॉर्क में, वो पूर्व राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट की पत्नी एलेनोर रूजवेल्ट से मिली. एलेनोर रूजवेल्ट लंबे समय से नागरिक अधिकारों की हिमायती रही थीं.

एलेनोर रूजवेल्ट

1933 से 1945 तक, एलेनोर रूजवेल्ट,राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट की पत्नी थीं. वो नागरिक अधिकारों की एक बड़ी समर्थक थीं. 1938 में, बर्मिंघम, अलबामा में एक सम्मेलन में भाग लेने के दौरान, वो सभागार में गोरे लोगों वाले भाग में नहीं बैठना चाहती थीं. वो अपने अश्वेत दोस्तों के साथ बैठना चाहती थीं. इसलिए वह उठ गईं और गलियारे के काले हिस्से में चली गईं. एक पुलिस अधिकारी ने उन्हें बताया कि वो कानून तोड़ रही थीं, इसलिए उन्होंने गलियारे के बीचों-बीच एक कुर्सी रखी और वहीं बैठ गईं. अगले वर्ष, वो सार्वजनिक रूप से अमेरिकी क्रांति की बेटियों से दूर हट गईं, जब समूह ने अपने सभागार में काले गायक मैरियन एंडरसन को गाने से मना किया.

आखिरकार सबकी मेहनत रंग लाई. 13 नवंबर, 1956 को, अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय, देश की सर्वोच्च अदालत ने फैसला दिया कि बस अलगाव (सेग्रीगेशन) असंवैधानिक था. डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर ने कहा कि वो "पूरी मानव जाति के लिए एक जीत थी."

उन्होंने आगे कहा, "असलियत में, ब्रह्मांड न्याय के पक्ष में है."

दिसंबर 1956 में, मोंटगोमरी का अश्वेत समुदाय, बसों में वापस बैठने को तैयार हुआ. लेकिन इस बार उन्हें पीछे सवारी नहीं करनी पड़ी. लुक मैगजीन के एक रिपोर्टर और फोटोग्राफर के साथ रोजा क्लीवलैंड, एवेन्यू बस में चढ़ी.

जिम ब्लेक, वही बस चालक, जिसने रोजा को गिरफ्तार करवाया था, ड्राइवर की सीट पर था. रोजा ने उसे अनदेखा किया. रोजा आगे की एक सीट पर बैठ गई और फिर एक रिपोर्टर ने उसकी तस्वीर खींची. यह तस्वीर रोजा की सबसे प्रसिद्ध तस्वीर है.

रोजा पार्क्स अब एक हीरोइन थी.

अध्याय 9
आगे बढ़ो

जी हां, रोजा एक हीरोइन थी. विरोध का उसका सरल कार्य - बस की सीट छोड़ने से इनकार करना - को अक्सर 1960 के दशक के शक्तिशाली नागरिक अधिकार आंदोलन की शुरुआत के रूप में देखा जाता है. हालांकि, कठिन समय अभी खत्म नहीं हुआ था. रोजा को नफरत भरे पत्र और धमकी भरे फोन कॉल्स मिलने लगे. रेमंड रात में भरी हुई बंदूक लेकर सोने लगा. अब कोई भी उसे नौकरी पर नहीं रखना चाहता था.

रोजा और उसका परिवार अपना गुजारा कैसे चलाता? अब उन्हें मोंटगोमरी शहर को छोड़ना होगा.

वहां से रोजा, रेमंड और उसकी मां, डेट्रॉइट चले गए. वहां रोजा का भाई सिल्वेस्टर अभी भी रहता था. वे डेट्रॉइट में वेस्ट साइड के एक अपार्टमेंट में रहने लगे. रेमंड ने मिशिगन लाइसेंस प्राप्त करने के लिए एक हेयर-कटिंग स्कूल में पढ़ाई की.

रोजा को स्टॉकटन सिलाई कंपनी में एक नौकरी मिली. वो एप्रन और स्कर्ट सिलती थी. वो शांत काम उसे बहुत पसंद आया.

रोजा एक स्थानीय चर्च से जुड़ी और उसने नागरिक अधिकारों के लिए काम करना जारी रखा.

अगस्त 1963 में, रोजा ने वाशिंगटन डी.सी. में एक ऐतिहासिक नागरिक अधिकार मार्च में भाग लिया. डॉ किंग ने लिंकन मेमोरियल के सामने अपना प्रसिद्ध "आई हैव ए ड्रीम" (मेरा भी एक सपना है) भाषण दिया. उस मोर्चे में लोगों की संख्या देखकर रोजा रोमांचित हुई. गोरे और काले, दो लाख से अधिक लोगों ने उसमें भाग लिया. हालांकि अभिनेत्री जोसेफिन बेकर ने भाषण दिया, लेकिन रोजा इस बात से निराश हुई कि इस कार्यक्रम में महिलाओं की भूमिका बड़ी सीमित थी.
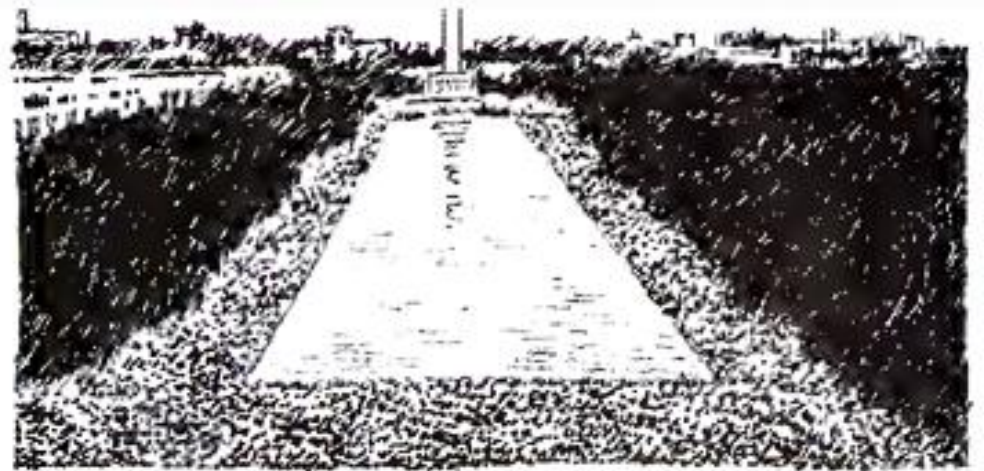
फिर भी, महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे.

राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने 1964 में नागरिक अधिकार अधिनियम पर हस्ताक्षर किए. अब यह एक कानून बना कि काले लोगों के साथ काम पर, या घर में, समान व्यवहार किया जाना था.

1965 में मतदान अधिकार अधिनियम का पालन किया गया. उन सभी अनुचित नियमों को समाप्त कर दिया, जो अश्वेतों को मतदान से रोकते थे. रोजा ने उसके लिए बहुत संघर्ष किया था.

1964 का नागरिक अधिकार अधिनियम

1964 का नागरिक अधिकार अधिनियम जिस पर राष्ट्रपति जॉनसन के हस्ताक्षर थे, अल्पसंख्यकों को समान अधिकार प्रदान करने में एक महान मील का पत्थर था. उसने जिम-क्रो के अलगाव (सेग्रीगेशन) कानूनों को हटाया. अब सभी लोगों को - चाहें वो गोरे हों या काले, रेस्तरां, थिएटर, पुस्तकालय, और होटल जैसी सार्वजनिक सुविधाओं को लेने का अधिकार था. अब कोई सार्वजनिक स्थान "केवल गोरों के लिए" सुरक्षित नहीं रह सकता था. यदि स्कूल काले छात्रों को प्रवेश नहीं देते, तो स्कूल को अदालत में घसीटा जा सकता था. पंद्रह से अधिक कर्मचारियों वाली कंपनियों को सभी कर्मचारियों के साथ समान व्यवहार करना था.

फिर, 1965 में, महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मतदान अधिकार अधिनियम आया. उसने जाति या रंग के आधार पर किसी को मतदान करने से रोकना अवैध बनाया. कांग्रेस ने अब मतदान के लिए रजिस्ट्रेशन, या नागरिकों को अनुचित "रीडिंग टेस्ट" या साक्षरता परीक्षा की आवश्यकता को ही अवैध घोषित कर दिया.

अश्वेतों के अधिक मतदान के साथ, अश्वेत उम्मीदवारों ने राजनीति में प्रवेश करना शुरू कर दिया. 1964 में, जॉन कॉनयर्स, जूनियर, जो डेट्रॉइट से थे, अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की सीट के लिए लड़े.

जॉन कॉनयर्स, जूनियर

रोजा अपने अभियान में सक्रिय रही. और जब जॉन कॉनयर्स, जीत गए, तो रोजा ने पूरे समय उनके लिए काम किया. उसने उनके पत्रों का जवाब दिया, मतदाता पंजीकरण का आयोजन किया, और उन लोगों के लिए नौकरी और घर ढूंढे जिन्हें उनकी जरूरत थी. उसने NAACP के लिए उसी तरह का बहुत काम किया लेकिन अब उनके प्रयास रंग ला रहे थे.

1960 के दशक के मध्य तक, डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर, संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे प्रसिद्ध नागरिक अधिकार नेता थे. रोजा ने डॉ. किंग की बहुत प्रशंसा की. लेकिन रोजा को हर समय डॉ. किंग के अहिंसा के संदेश से सहमत होने में परेशानी होती थी.

डॉ. किंग कभी भी लड़ने में विश्वास नहीं करते थे. जब एक गोरे व्यक्ति ने भाषण के दौरान डॉ. किंग के चेहरे पर मुक्का मारा, तो डॉ. किंग ने उसे प्रतिकार में नहीं मारा. वो नफरत की जगह प्यार देना चाहते थे. "मैं अपने दिमाग में उस बिंदु तक नहीं पहुँच सकी," रोजा ने एक बार कहा. रोजा एक अन्य प्रसिद्ध अश्वेत नेता, मैल्कम एक्स के शब्दों से प्रभावित हुईं. मैल्कम एक्स ने अश्वेतों को मजबूत होने और अपने लिए खड़े होने के लिए प्रोत्साहित किया. कभी-कभी इसका मतलब खुद के लिए भी लड़ना होता था.

1960 के दशक में नागरिक अधिकार आंदोलन और मजबूत हुआ. लेकिन विकास और ताकत के साथ दुख और दर्द भी आया. काले चर्चों पर बमबारी की गई. 1965 में, मैल्कम एक्स की हत्या कर दी गई. 1968 में, मार्टिन लूथर किंग, जूनियर की गोली मारकर हत्या कर दी गई. रोजा ने उन सभी के लिए दुख जताया.

1975 में, बस बहिष्कार की बीसवीं वर्षगांठ के लिए रोजा मोंटगोमरी लौटी. अब चीजें बदल चुकी थीं. अब राज्य सरकार में अलबामा के पंद्रह अश्वेत सांसद थे.

मैल्कम एक्स

मैल्कम एक्स का जन्म 19 मई, 1925 को ओमाहा, नेब्रास्का में मैल्कम लिटिल के नाम से हुआ था. उनका अधिकांश बचपन पालक घरों और अनाथालयों में गुज़रा. मैल्कम एक छोटा अपराधी बन गया और उसे जेल भेज दिया गया. वहाँ, वह एक मुसलमान बन गया. उसने तय किया कि "लिटिल" एक गुलाम नाम था, और इसके बजाए उसने "X" नाम स्वीकारा. "X" उसके खोए हुए अफ्रीकी आदिवासी नाम का प्रतीक था. जब वह जेल से बाहर आया, तो वो एक पादरी बना. काले समुदाय में उसकी लोकप्रियता बढ़ी. सबसे पहले, मैल्कम एक्स नस्लों के बीच संबंधों में सुधार करना नहीं चाहता था. उसका मानना था कि अश्वेतों को अपने समुदायों का खुद निर्माण करना चाहिए. 1964 में मैल्कम एक्स सऊदी अरब गया. वहां, उसने कहा कि वहां उन्हें "कांस्य बालों वाले, नीली आंखों वाले पुरुष मिले जिन्हें वो अपना भाई बुला सकता था." जब वो अमेरिका में वापिस लौटे तब उन्होंने सभी जातियों, और नस्लों के एक-साथ रहने के बारे में बात की. 1965 में, न्यूयॉर्क शहर में भाषण देते समय मैल्कम एक्स की गोली मारकर हत्या कर दी गई.

1968 से, न्यू यॉर्क के ब्रुकलिन की एक अश्वेत महिला अमेरिकी कांग्रेस की सदस्य रही है. उसका नाम शर्ली चिशोल्म था. कई शहरों में काले महापौर थे. कई कॉलेजों में काले लोगों के इतिहास के अध्ययन की पेशकश की गई. काले कलाकारों की कृतियाँ और लेखकों को नया समर्थन मिला. इस प्रगति ने रोजा को गौरवान्वित और प्रसन्न किया.

शर्ली चिशोल्म

उनका निजी जीवन इतना खुशहाल नहीं था. 1977 में रेमंड की कैंसर से मृत्यु हो गई. तीन महीने बाद, उसी बीमारी से रोजा के भाई की भी मृत्यु हो गई. उनकी माँ बूढ़ी और कमजोर थीं और उन्हें एक नर्सिंग होम में जाना पड़ा.

रोजा अब अकेली थी. वो अभी भी जॉन कॉनियर्स, जूनियर और चर्च के साथ काम कर रही थीं. फिर 1987 में, उन्होंने डेट्रायट में, रोजा एंड रेमंड पार्क्स इंस्टीट्यूट फॉर सेल्फ डेवलपमेंट की स्थापना की. इस संस्था ने युवाओं को अपनी शिक्षा जारी रखने में मदद करने के लिए कार्यक्रमों की पेशकश की. रोजा ने हमेशा युवाओं के साथ एक विशेष बंधन महसूस किया था.

जैसे-जैसे वो बड़ी होती गईं, रोजा पार्क्स की उपलब्धियों को व्यापक रूप से पहचाना जाने लगा. 1979 में, उन्हें NAACP द्वारा स्पिंगर्न मेडल दिया गया. 1996 में, राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने उन्हें स्वतंत्रता के राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया.

जिम हास्किंस नाम के एक लेखक की मदद से रोजा ने अपने जीवन के बारे में एक किताब लिखी. इसका नाम था : "रोजा पार्क्स: माई स्टोरी". यह पुस्तक 1992 में प्रकाशित हुई. उन्होंने "डियर मिसेज पार्क्स: ए डायलॉग विद टुडेज़ यूथ", बच्चों से उन्हें मिले पत्रों और उनके जवाबों का एक संग्रह भी लिखा. एक और किताब उन्होंने लिखी, "क्वाइट स्ट्रेंथ", जो 1994 में छपी.

उन्होंने 1999 में कांग्रेस का गोल्ड मेडल प्राप्त किया. उसी वर्ष, टाइम पत्रिका ने उन्हें बीसवीं सदी के बीस सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक बताया . उन्हें दुनिया भर से पुरस्कार, पदक और मानद उपाधियाँ मिलीं. 2000 में, मोंटगोमरी में रोजा पार्क्स लाइब्रेरी एंड म्यूजियम खोला गया.

रोजा, पचहत्तर वर्ष की आयु में 1988 में सेवानिवृत्त हुईं. अब उनके पास काफी समय था.
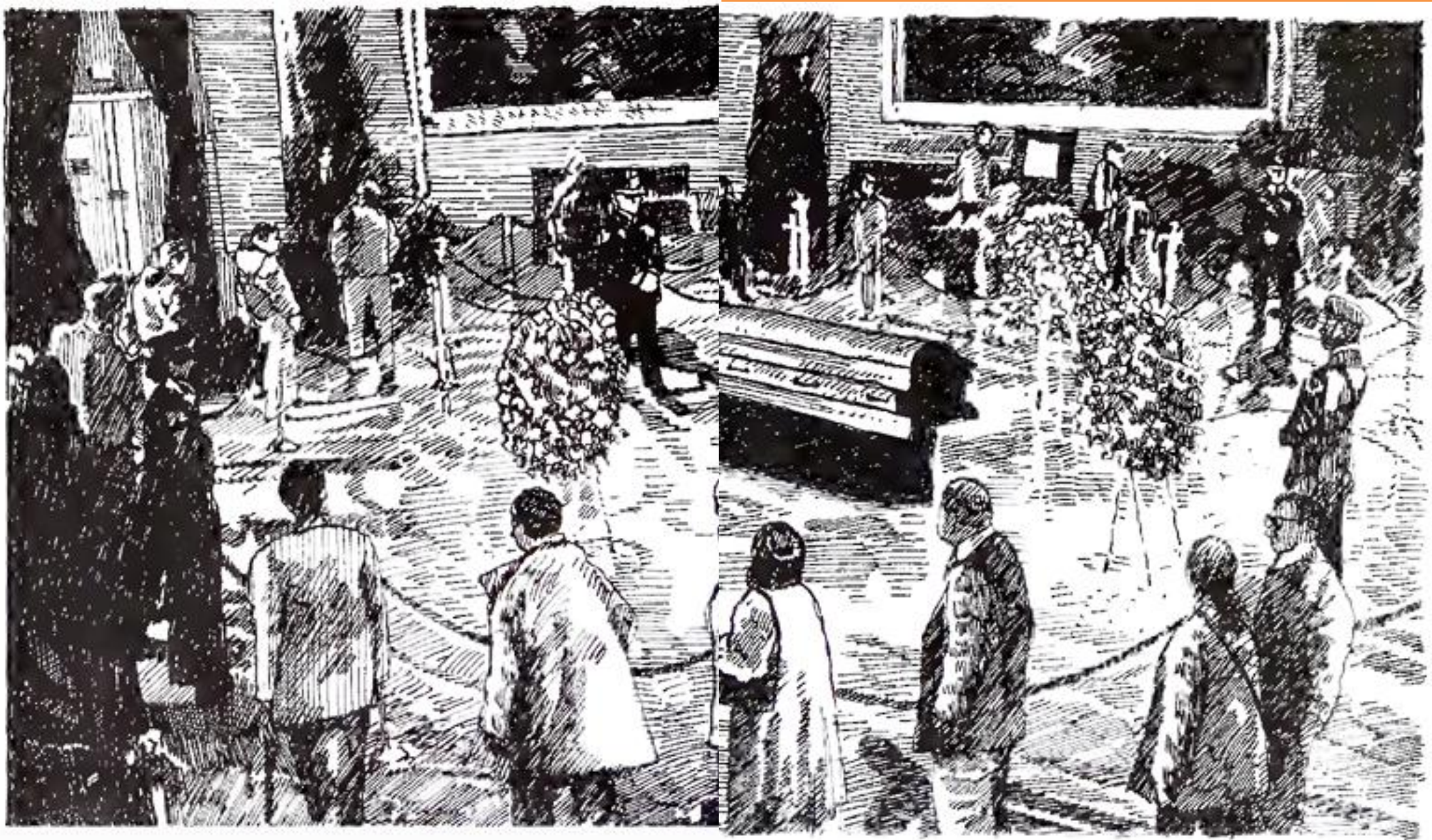
24 अक्टूबर, 2005 को 92 साल की उम्र में रोजा का निधन हो गया. उनके अंतिम संस्कार से पहले, उनके ताबूत को वाशिंगटन, डी.सी. में कैपिटल बिल्डिंग में लाया गया, ताकि लोग आ सकें और रोजा पार्क्स को अपनी श्रद्धांजलि दे सकें.

यह पहली बार था जब किसी महिला को इस तरह से सम्मानित किया गया था. उनके अंतिम संस्कार में चार हजार से ज्यादा लोग शामिल हुए.

रोजा को उनके दत्तक शहर डेट्रॉइट में एक कब्रिस्तान में दफनाया गया.

जिस महिला ने अपनी सीट छोड़ने से इनकार कर दिया था, उसने अपने शांत साहस से दुनिया को बदलने में मदद की. कुछ लोगों को लगा कि रोजा इसलिए नहीं उठी थीं क्योंकि वो थकी हुई या वो बूढ़ी थीं. रोजा ने कहा कि वे कारण नहीं थे. "मैं शारीरिक रूप से थकी नहीं थी," उन्होंने कहा, "न ही उस दिन मुझे काम से अधिक थकान हुई थी. मैं बूढ़ी नहीं थी, हालाँकि कुछ लोग मुझे बूढ़ा मानते थे. मैं सिर्फ बयालीस साल की थी. नहीं, मैं गलतियां और अन्याय झेलते-झेलते थक ज़रूर गई थी."

रोजा पार्क के जीवन की समयरेखा

1913 रोजा लुईस मैककौली का जन्म टस्केगी अलबामा में हुआ

1924 लड़कियों के लिए मोंटगोमरी इंडस्ट्रियल स्कूल में नामांकन

1932 रेमंड पार्क से शादी

1934 हाई स्कूल डिप्लोमा प्राप्त किया

1943 NAACP की मोंटगोमरी शाखा की सचिव बनीं

1944 मैक्सवेल एयर फ़ोर्स बेस में काम किया

1945 मतदान के लिए पंजीकरण

1955 1 दिसंबर को एक गोरे व्यक्ति को अपनी बस की सीट देने से इनकार करने के लिए गिरफ्तार; मोंटगोमरी बस बॉयकॉट शुरू

1956 मांटगोमेरी बस बहिष्कार समाप्त

1957 डेट्रॉइट, मिशिगन में शिफ्ट हुईं

1965 मिशिगन के प्रतिनिधि जॉन कॉनियर्स, जूनियर के लिए काम करना शुरू किया

1977 रेमंड पार्क का निधन

1987 स्व-विकास के लिए रोजा और रेमंड पार्क संस्थान की स्थापना

1988 जॉन कॉनियर्स के कार्यालय में बीस से अधिक वर्षों के बाद सेवानिवृत्त हुईं

1992 जिम हास्किन्स के साथ उनकी पहली पुस्तक "रोजा पार्क्स: माई स्टोरी" का प्रकाशन

1996 को सर्वोच्च अमेरिकी नागरिक सम्मान, "स्वतंत्रता का राष्ट्रपति पदक" से सम्मानित

1999 कांग्रेसनल गोल्ड मेडल ऑफ ऑनर से सम्मानित; टाइम पत्रिका द्वारा सदी के बीस सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक के रूप में नामित-

2005 92 वर्ष की आयु में निधन